Pariksha Saathi — उत्तर प्रदेश सामान्य ज्ञान नोट्स

1 टॉपिक • 11 पाठ • अपडेट 28 अक्टूबर 2026

ये नोट्स एक AI सहायक ने लिखे हैं - वही पाठ जो Pariksha Saathi ऐप में हैं। किसी विषय-विशेषज्ञ ने इनकी समीक्षा नहीं की है। ज़रूरी तथ्य आधिकारिक स्रोत या मानक पाठ्यपुस्तक से मिला लें। कोई गलती दिखे तो बताएँ: parikshasaathi.com/contact/

इन परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल उत्तर प्रदेश सामान्य ज्ञान के टॉपिक: UP Police Constable, UPPSC Prelims, UPSSSC PET। हर टॉपिक के अंत में उसके मुफ़्त अभ्यास प्रश्नों का लिंक है; पूरे मॉक टेस्ट Pariksha Saathi ऐप और वेबसाइट पर मुफ़्त हैं।

विषय-सूची

उत्तर प्रदेश सामान्य ज्ञान

दोहराव पत्रक

उत्तर प्रदेश सामान्य ज्ञान

उत्तर प्रदेश सामान्य ज्ञान

परीक्षा क्या पूछती है: UPPSC प्रारंभिक परीक्षा और UP पुलिस कांस्टेबल के प्रश्नपत्र, दोनों में उत्तर प्रदेश से जुड़े प्रश्नों का एक खंड होता है। ये प्रश्न लगभग हमेशा तथ्यात्मक होते हैं: कोई नदी और उसका संगम, 1857 का केंद्र और उसका नेता, नगर और उसका उद्योग, लोक विधा और उसका क्षेत्र, विधानमंडल की सीटों की संख्या या किसी संस्थान का स्थान। यहाँ गहरे विश्लेषण की नहीं, सटीक स्मरण की आवश्यकता है, इसलिए तथ्यों को युग्मों और सूचियों में याद करें।

महाजनपदों से हर्ष तक का इतिहास: सोलह महाजनपदों में से काशी (वाराणसी), कोसल (श्रावस्ती, अयोध्या), वत्स (कौशाम्बी), मल्ल (कुशीनगर, पावा), शूरसेन (मथुरा) और पांचाल (बरेली में अहिच्छत्र, फर्रुखाबाद में काम्पिल्य) उत्तर प्रदेश में थे। बुद्ध ने सारनाथ में प्रथम उपदेश दिया और कुशीनगर में देह त्यागी; श्रावस्ती उनका प्रिय वर्षावास था। राष्ट्रीय प्रतीक अशोक के सारनाथ सिंह स्तंभ-शीर्ष से रूपांतरित है। इलाहाबाद स्तंभ पर हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति समुद्रगुप्त की प्रशंसा करती है, और गाजीपुर का भितरी स्तंभ स्कंदगुप्त का है। हर्ष ने कन्नौज से शासन किया, जो बाद में पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूटों के त्रिपक्षीय संघर्ष का केंद्र बना। सिकंदर लोदी ने 1504 में आगरा बसाया, जौनपुर शर्की सुल्तानों की राजधानी था, और अकबर ने फतेहपुर सीकरी व इलाहाबाद किला बनवाया।

अवध, 1857 और स्वतंत्रता संग्राम: सआदत खान बुरहान-उल-मुल्क ने 1722 में अवध की नवाबी स्थापित की, आसफ-उद-दौला ने 1775 में राजधानी फैजाबाद से लखनऊ ले जाकर बड़ा इमामबाड़ा बनवाया, और वाजिद अली शाह अंतिम नवाब थे, जिनके बाद डलहौजी ने 1856 में कुशासन के आधार पर अवध का विलय किया। 1857 का विद्रोह 10 मई को मेरठ से शुरू हुआ; इसके केंद्र और नेता थे कानपुर (नाना साहेब, तात्या टोपे), लखनऊ (बेगम हजरत महल), झाँसी (रानी लक्ष्मीबाई), बरेली (खान बहादुर खान) और फैजाबाद (मौलवी अहमदुल्ला शाह)। बाद की प्रमुख घटनाएँ: 1916 का लखनऊ समझौता, 4 फरवरी 1922 को गोरखपुर में चौरी-चौरा, 9 अगस्त 1925 की काकोरी कार्रवाई (राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान), और 1931 में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में चंद्रशेखर आजाद का बलिदान। प्रांत 1902 में आगरा व अवध संयुक्त प्रांत, 1937 में संयुक्त प्रांत और 24 जनवरी 1950 को उत्तर प्रदेश बना (उत्तर प्रदेश दिवस)। उत्तराखंड 9 नवंबर 2000 को अलग हुआ। गोविंद बल्लभ पंत प्रथम मुख्यमंत्री, सरोजिनी नायडू प्रथम राज्यपाल और 1963 में सुचेता कृपलानी भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनीं।

भूगोल: उत्तर प्रदेश नेपाल तथा नौ राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों (उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार) को छूता है; पंजाब और पश्चिम बंगाल इसकी सीमा पर नहीं हैं। क्षेत्रफल में यह चौथा, पर जनसंख्या में पहला है (जनगणना 2011, लगभग 19.98 करोड़)। उत्तर में भाबर की कंकड़ पट्टी और दलदली तराई, बीच में विशाल गंगा का मैदान और दक्षिण में विंध्य-बुंदेलखंड पठार है। गंगा बिजनौर से प्रवेश करती है और प्रयागराज संगम पर यमुना से मिलती है; घाघरा बिहार के छपरा के पास इसमें मिलती है; गोमती पीलीभीत से निकलकर लखनऊ और जौनपुर से गुजरती है; चंबल इटावा में, बेतवा हमीरपुर में और केन बाँदा में यमुना से मिलती है। सोनभद्र चार राज्यों को छूता है और वहाँ रिहंद बाँध तथा ओबरा, अनपरा और सिंगरौली विद्युत संयंत्र हैं। माताटीला और राजघाट बाँध बेतवा पर हैं। ऊपरी गंगा नहर हरिद्वार से और निचली गंगा नहर नरौरा से निकलती है। संरक्षित क्षेत्र: दुधवा (लखीमपुर खीरी), पीलीभीत बाघ अभयारण्य, कतर्नियाघाट (बहराइच), ओखला (गौतम बुद्ध नगर), नवाबगंज (उन्नाव), समसपुर (रायबरेली) और चंबल घड़ियाल अभयारण्य।

अर्थव्यवस्था: उत्तर प्रदेश गन्ना, गेहूँ, आलू और दूध में भारत में अग्रणी है; चावल में वह तेलंगाना और पश्चिम बंगाल के साथ शीर्ष तीन उत्पादकों में है और पहला स्थान हर वर्ष बदलता रहता है - कृषि मंत्रालय के अंतिम अनुमानों में 2022-23 में उत्तर प्रदेश (16.14 मिलियन टन) पहले स्थान पर था, 2023-24 में तेलंगाना (16.87 मिलियन टन) आगे निकल गया (उत्तर प्रदेश 15.99 के साथ दूसरे स्थान पर रहा), और 2024-25 के अंतिम अनुमानों (नवंबर 2025 में जारी) में उत्तर प्रदेश 20.76 मिलियन टन के साथ फिर पहले स्थान पर आ गया; तेलंगाना (17.45) दूसरे और पश्चिम बंगाल (16.02) तीसरे स्थान पर रहे। उद्योग नगरवार याद रखें: कानपुर चमड़ा, मुरादाबाद पीतल, फिरोजाबाद काँच, अलीगढ़ ताले, मेरठ खेल सामग्री, भदोही कालीन, वाराणसी रेशम, सहारनपुर

काष्ठ नक्काशी, खुर्जा मिट्टी के बर्तन, कन्नौज इत्र और लखनऊ चिकनकारी, जिन्हें 2018 की ODOP योजना ने औपचारिक रूप दिया। बुलंदशहर के नरौरा में राज्य का एकमात्र परमाणु संयंत्र, मथुरा में रिफाइनरी और नोएडा में IT केंद्र है।

राजव्यवस्था: विधानमंडल द्विसदनीय है, 403 सदस्यीय विधान सभा और 100 सदस्यीय विधान परिषद। उत्तर प्रदेश लोक सभा में 80 और राज्य सभा में 31 सदस्य भेजता है। उच्च न्यायालय प्रयागराज में है (स्थापना 1866, 1869 में वहाँ स्थानांतरित) और 1948 से लखनऊ खंडपीठ है। लखनऊ राजधानी है और जिले आयुक्तों के अधीन मंडलों में बँटे हैं।

संस्कृति और पर्यटन: राज्य प्रतीक हैं बारहसिंगा (पशु), सारस क्रेन (पक्षी) और पलाश (पुष्प); राज्य वृक्ष अधिकांश राज्य-प्रतीक सूचियों में अशोक बताया गया है, पर एनसीईआरटी की पुस्तिका 'इंडिया: यूनिटी इन कल्चरल डायवर्सिटी' में साल। लोक विधाएँ: नौटंकी, रासलीला और चरकुला (ब्रज), कजरी (मिर्जापुर), बिरहा और सोहर (पूर्वांचल), आल्हा (बुंदेलखंड)। बोलियाँ: खड़ी बोली (पश्चिम), ब्रज, अवधी, बुंदेली, भोजपुरी। साहित्य: तुलसीदास, कबीर, सूरदास, जायसी, प्रेमचंद, निराला, महादेवी वर्मा, बच्चन, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त। UNESCO विश्व धरोहर स्थल: ताजमहल, आगरा किला, फतेहपुर सीकरी और (जुलाई 2026 से) सारनाथ का प्राचीन बौद्ध स्थल; अमूर्त विरासत: रामलीला और कुंभ मेला। संस्थान: BHU (1916), AMU (1920), इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1887), IIT कानपुर (1959), IIM लखनऊ (1984), लखनऊ में CDRI, NBRI और IITR, बरेली में IVRI।

जाल (ट्रैप): मंगल पांडे की घटना बैरकपुर में हुई, मेरठ में नहीं। अवध का विलय कुशासन के आधार पर हुआ, व्यपगत सिद्धांत से नहीं। लक्ष्मीबाई ग्वालियर में शहीद हुईं, झाँसी में नहीं। सुमित्रानंदन पंत और गो.ब. पंत का जन्म वर्तमान उत्तराखंड में हुआ। यह न मानें कि चावल में पश्चिम बंगाल अग्रणी है: उत्तर प्रदेश, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल शीर्ष तीन उत्पादक हैं और पहला स्थान हर वर्ष बदलता रहता है (2023-24 के अंतिम अनुमानों में तेलंगाना पहले स्थान पर था, पर 2024-25 में उत्तर प्रदेश फिर पहले स्थान पर आ गया)। घाघरा गंगा से बिहार में मिलती है, उत्तर प्रदेश में नहीं।

उदाहरण

- उत्तर प्रदेश में बुद्ध का जीवन: प्रथम उपदेश सारनाथ, प्रिय वर्षावास श्रावस्ती, महापरिनिर्वाण कुशीनगर। जन्म (लुंबिनी) नेपाल में हुआ।
- 1857 के नेताओं का सूत्र: 'मेरठ से शुरू, कानपुर नाना, लखनऊ बेगम, झाँसी रानी, बरेली खान' (खान बहादुर खान)।
- नाम परिवर्तन: 1902 आगरा व अवध संयुक्त प्रांत, 1937 संयुक्त प्रांत, 24 जनवरी 1950 उत्तर प्रदेश, 9 नवंबर 2000 उत्तराखंड अलग।
- संगम सूची: चंबल-यमुना इटावा; बेतवा-यमुना हमीरपुर; केन-यमुना बाँदा; यमुना-गंगा प्रयागराज; घाघरा-गंगा छपरा (बिहार)।
- सोनभद्र उत्तर प्रदेश का एकमात्र जिला है जो चार राज्यों (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार) को छूता है और राज्य का ऊर्जा केंद्र है: रिहंद, ओबरा, अनपरा, सिंगरौली।
- उद्योग नगर: कानपुर चमड़ा, मुरादाबाद पीतल (पीतल नगरी), फिरोजाबाद काँच (सुहाग नगरी), अलीगढ़ ताले, मेरठ खेल सामग्री, भदोही कालीन, कन्नौज इत्र।
- याद रखने योग्य संख्याएँ: विधान सभा 403, विधान परिषद 100, लोक सभा 80, राज्य सभा 31; इलाहाबाद उच्च न्यायालय 1866, लखनऊ खंडपीठ 1948।
- राज्य प्रतीक: पशु बारहसिंगा, पक्षी सारस क्रेन, पुष्प पलाश, वृक्ष अशोक (एनसीईआरटी की पुस्तिका में साल)। दुधवा बारहसिंगा का घर है।
- पश्चिम से पूर्व बोली मानचित्र: खड़ी बोली (मेरठ), ब्रज (मथुरा-आगरा), कन्नौजी, बुंदेली (झाँसी), अवधी (लखनऊ-अयोध्या), भोजपुरी (वाराणसी-गोरखपुर)।
- उत्तर प्रदेश में UNESCO: जुलाई 2026 तक चार विश्व धरोहर स्थल (आगरा जिले में ताजमहल, आगरा किला और फतेहपुर सीकरी, तथा वाराणसी में सारनाथ का प्राचीन बौद्ध स्थल, 2026); रामलीला (2008) और कुंभ मेला (2017) अमूर्त विरासत।
- लखनऊ के संस्थान: CDRI (औषधि), NBRI (वनस्पति), IITR (विष विज्ञान), CIMAP (सगंध पौधे), बीरबल साहनी संस्थान (पुरावनस्पति), भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान।

त्वरित दोहराव: 24 जनवरी 1950 को उत्तर प्रदेश नाम; 9 नवंबर 2000 को उत्तराखंड अलग; प्रथम CM गो.ब. पंत, प्रथम राज्यपाल सरोजिनी नायडू; 1857 की शुरुआत मेरठ 10 मई; चौरी-चौरा 4 फरवरी 1922 (गोरखपुर); काकोरी 9 अगस्त 1925; विधान सभा 403, परिषद 100, लोक सभा 80, राज्य सभा 31; उच्च न्यायालय इलाहाबाद 1866, लखनऊ खंडपीठ 1948; राज्य पशु बारहसिंगा, पक्षी सारस, पुष्प पलाश, वृक्ष अशोक; गन्ना, गेहूँ, आलू में सबसे बड़ा उत्पादक; दुधवा NP लखीमपुर खीरी; रिहंद बाँध सोनभद्र; UNESCO विश्व धरोहर स्थल ताजमहल, आगरा किला, फतेहपुर सीकरी और सारनाथ (2026)।

प्राचीन और मध्यकालीन उत्तर प्रदेश: हड़प्पा स्थलों से अवध के नवाबों तक

प्रागैतिहासिक और हड़प्पा स्थल: प्रयागराज और मिर्जापुर की बेलन घाटी में पाषाण युग का लंबा क्रम सुरक्षित है। चोपानी मांडो एक मध्यपाषाणकालीन स्थल है जहाँ हाथ से बने सबसे प्राचीन मृद्भांडों में से कुछ मिले हैं, कोल्डिहवा में उपमहाद्वीप में चावल की खेती के सबसे प्राचीन साक्ष्यों में से कुछ मिले हैं, और प्रतापगढ़ के सराय नाहर राय और महदहा में मध्यपाषाणकालीन शवाधान मिले हैं। हड़प्पा सभ्यता राज्य के केवल पश्चिमी छोर तक पहुँची: मेरठ जिले में हिंडन नदी के किनारे स्थित आलमगीरपुर सबसे पूर्वी हड़प्पा स्थल है, जबकि हुलास (सहारनपुर) और सनौली (बागपत) का विशाल शवाधान स्थल उत्तर हड़प्पा चरण के हैं। पश्चिमी गंगा मैदान में हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, मथुरा और अतरंजीखेड़ा (एटा) जैसी चित्रित धूसर मृद्भांड (PGW) बस्तियाँ उत्तर वैदिक काल की पहचान हैं।

महाजनपद: ईसा पूर्व छठी शताब्दी तक बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में वर्णित सोलह महाजनपदों में से छह मुख्यतः वर्तमान उत्तर प्रदेश में थे, और कुरु (हस्तिनापुर के आसपास) तथा चेदि (बुंदेलखंड में) के कुछ भाग भी इसी क्षेत्र में आते थे। काशी की राजधानी वाराणसी थी; कोसल श्रावस्ती से शासित था और अयोध्या (साकेत) उसका दूसरा बड़ा नगर था, जहाँ बुद्ध के समकालीन प्रसेनजित राजा थे; वत्स की राजधानी यमुना तट पर कौशाम्बी थी, जहाँ उदयन का शासन था; पांचाल की उत्तरी राजधानी अहिच्छत्र (बरेली) और दक्षिणी राजधानी काम्पिल्य (फर्रुखाबाद) थी; शूरसेन की राजधानी मथुरा थी; और मल्लों के केंद्र कुशीनगर और पावा थे। कोसल ने काशी को अपने में मिला लिया और बाद में मगध ने दोनों को मिला लिया, जो गंगा के मैदान में एक साम्राज्य बनने की पहली सीढ़ी थी।

बौद्ध और जैन स्थल: बौद्ध तीर्थयात्रा के आठ महान स्थलों में से चार इसी राज्य में हैं। बुद्ध ने वाराणसी के निकट सारनाथ के मृगदाव में अपना प्रथम उपदेश (धर्मचक्र प्रवर्तन) दिया, कुशीनगर में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया, श्रावस्ती में व्यापारी अनाथपिंडक द्वारा दान किए गए जेतवन विहार में अनेक वर्षावास बिताए, और माना जाता है कि वे संकिसा (फर्रुखाबाद) में स्वर्ग से अवतरित हुए। कौशाम्बी में घोषिताराम विहार था। जैनों के लिए अयोध्या प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ तथा चार अन्य तीर्थंकरों की जन्मभूमि है; वाराणसी तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की, श्रावस्ती संभवनाथ की, कौशाम्बी पद्मप्रभ की, और हस्तिनापुर शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरनाथ की जन्मभूमि है। मथुरा के कंकाली टीला से एक जैन स्तूप मिला है, और देवगढ़ (ललितपुर) में जैन मंदिरों का बड़ा समूह है।

मौर्य, कुषाण और गुप्त: चमकदार चुनार बलुआ पत्थर से तराशा गया सारनाथ का अशोक सिंह स्तंभ-शीर्ष भारत का राष्ट्रीय प्रतीक बना। इलाहाबाद स्तंभ, जिसके बारे में माना जाता है कि वह पहले कौशाम्बी में खड़ा था, पर अशोक के अभिलेख (रानी अभिलेख सहित), समुद्रगुप्त की प्रशंसा में हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति और जहाँगीर का एक अभिलेख अंकित है; मिर्जापुर के अहरौरा में अशोक का एक लघु शिलालेख है। कनिष्क के समय कुषाणों ने मथुरा को दूसरी राजधानी बनाया, और मथुरा कला शैली ने चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर में बौद्ध, जैन और हिंदू मूर्तियाँ गढ़ीं, जिनमें माट से मिली कनिष्क की सिरविहीन प्रतिमा भी है। गुप्त काल में सारनाथ शैली ने बुद्ध की सर्वश्रेष्ठ आसीन प्रतिमाएँ बनाईं; स्कंदगुप्त का भितरी स्तंभ (गाजीपुर) हूणों के विरुद्ध उसके संघर्ष का उल्लेख करता है; देवगढ़ का दशावतार मंदिर शिखर वाले प्राचीनतम मंदिरों में है; और भीतरगाँव (कानपुर) भारत के सबसे पुराने बचे हुए ईंट के मंदिरों में से एक है।

कन्नौज और त्रिपक्षीय संघर्ष: गुप्तों के बाद मौखरियों ने कन्नौज से शासन किया, और हर्षवर्धन (606-647) अपनी राजधानी थानेसर से कन्नौज ले आए। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने कन्नौज में हर्ष की सभा और प्रयाग में हर पाँच वर्ष पर किए जाने वाले उनके दान का वर्णन किया है, और उनके दरबारी कवि बाणभट्ट ने हर्षचरित लिखा। महोदय भी कहलाने वाला कन्नौज उत्तर भारत की सत्ता का प्रतीक बन गया: आठवीं शताब्दी के अंत से दसवीं शताब्दी तक गुर्जर-प्रतिहारों, बंगाल के पालों और दक्कन के राष्ट्रकूटों ने इसके लिए संघर्ष किया। प्रतिहारों ने नागभट्ट द्वितीय के समय इसे जीता और मिहिर भोज के समय वे अपने चरम पर पहुँचे। बाद में गहड़वालों ने कन्नौज और वाराणसी से शासन किया, जब तक कि 1194 में वर्तमान फिरोजाबाद के निकट चंदावर में मुहम्मद गोरी ने जयचंद को पराजित नहीं कर दिया, जबकि चंदेल महोबा और कालिंजर दुर्ग से बुंदेलखंड पर शासन करते थे।

सल्तनत और मुगल केंद्र:
फिरोज शाह तुगलक ने जौनपुर बसाया और उसका नाम मुहम्मद बिन तुगलक (जौना खाँ) के नाम पर रखा; 1394 में मलिक-उस-शर्क की उपाधि वाले मलिक सरवर ने वहाँ स्वतंत्र शर्की राज्य स्थापित किया। इब्राहिम शाह शर्की ने 1408 में अटाला मस्जिद पूरी कराई, और जौनपुर विद्या का केंद्र बनकर शिराज-ए-हिंद कहलाया, जब तक कि बहलोल लोदी ने उसे अपने राज्य में नहीं मिला लिया। सिकंदर लोदी ने 1504 में आगरा बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाया, और 1540 में शेरशाह ने कन्नौज के निकट हुमायूँ को हराया। अकबर ने 1565 से आगरा किले का पुनर्निर्माण कराया, 1571 में फतेहपुर सीकरी बसाई और 1583 में इलाहाबाद का किला बनवाकर प्रयाग का नाम इलाहाबास रखा; शाहजहाँ ने अपनी राजधानी दिल्ली ले जाने से पहले ताजमहल बनवाया।

अवध के नवाब: सआदत खान बुरहान-उल-मुल्क 1722 में अवध के सूबेदार बने और एक लगभग स्वतंत्र वंश की नींव रखी। शुजाउद्दौला 1764 में बक्सर में हारे और 1765 में इलाहाबाद की संधि पर हस्ताक्षर किए; आसफुद्दौला ने 1775 में राजधानी फैजाबाद से लखनऊ स्थानांतरित की; सआदत अली खान ने 1801 में रुहेलखंड और निचला दोआब ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया; गाजीउद्दीन हैदर ने 1819 में बादशाह की उपाधि धारण की; और वाजिद अली शाह अंतिम शासक थे। रुहेलखंड में रुहेला अफगानों ने 1774 के रुहेला युद्ध तक बरेली से शासन किया, जिसके बाद उनके पास केवल रामपुर की छोटी रियासत बची।

उदाहरण

- आलमगीरपुर (मेरठ जिला, हिंडन तट) सबसे पूर्वी हड़प्पा स्थल है; हुलास (सहारनपुर) और सनौली (बागपत) उत्तर हड़प्पा स्थल हैं।
- बेलन घाटी: कोल्डिहवा में चावल की खेती के सबसे प्राचीन साक्ष्यों में से कुछ; चोपानी मांडो में हाथ से बने सबसे प्राचीन मृद्भांडों में से कुछ।
- उत्तर प्रदेश के महाजनपद: काशी (वाराणसी), कोसल (श्रावस्ती), वत्स (कौशाम्बी), पांचाल (अहिच्छत्र और काम्पिल्य), शूरसेन (मथुरा), मल्ल (कुशीनगर और पावा)।
- बौद्ध तीर्थयात्रा के आठ महान स्थलों में से चार उत्तर प्रदेश में: सारनाथ (प्रथम उपदेश), कुशीनगर (महापरिनिर्वाण), श्रावस्ती (जेतवन) और संकिसा (स्वर्ग से अवतरण)।
- उत्तर प्रदेश में जन्मे जैन तीर्थंकर: अयोध्या में ऋषभनाथ, वाराणसी में पार्श्वनाथ, श्रावस्ती में संभवनाथ, कौशाम्बी में पद्मप्रभ, हस्तिनापुर में शांतिनाथ।
- इलाहाबाद स्तंभ: अशोक के अभिलेख और रानी अभिलेख, समुद्रगुप्त की हरिषेण रचित प्रयाग प्रशस्ति, और जहाँगीर का एक अभिलेख।
- उत्तर प्रदेश में गुप्त स्मारक: देवगढ़ (ललितपुर) का दशावतार मंदिर, भीतरगाँव (कानपुर) का ईंट मंदिर, स्कंदगुप्त का भितरी स्तंभ (गाजीपुर)।
- कन्नौज: हर्ष की राजधानी; त्रिपक्षीय संघर्ष (प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट) का केंद्र; कन्नौज का जयचंद 1194 में चंदावर में मुहम्मद गोरी से हारा।
- जौनपुर: फिरोज शाह तुगलक ने बसाया; 1394 से शर्की राज्य (मलिक सरवर); अटाला मस्जिद 1408 में पूरी हुई; शिराज-ए-हिंद कहलाया।
- आगरा 1504 में सिकंदर लोदी ने बसाया; फतेहपुर सीकरी 1571 में अकबर ने बसाई; अवध की राजधानी 1775 में फैजाबाद से लखनऊ गई।

त्वरित दोहराव: आलमगीरपुर सबसे पूर्वी हड़प्पा स्थल; कोल्डिहवा प्राचीन चावल; मुख्यतः उत्तर प्रदेश में छह महाजनपद (काशी, कोसल, वत्स, पांचाल, शूरसेन, मल्ल); सारनाथ प्रथम उपदेश, कुशीनगर महापरिनिर्वाण, श्रावस्ती जेतवन, संकिसा अवतरण; सारनाथ सिंह शीर्ष चुनार बलुआ पत्थर का; मथुरा कला (कुषाण); देवगढ़ और भीतरगाँव (गुप्त); हर्ष की राजधानी कन्नौज; चंदावर 1194; शर्की जौनपुर 1394; आगरा 1504; फतेहपुर सीकरी 1571; अवध 1722 से, लखनऊ राजधानी 1775।

आधुनिक उत्तर प्रदेश और स्वतंत्रता संग्राम (1775-1950)

कंपनी का अधिकार कैसे हुआ: ब्रिटिश नियंत्रण चरणों में आया। फैजाबाद की संधि (1775) से अवध के नवाब ने बनारस ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया, और 1781 में वारेन हेस्टिंग्स ने बनारस के राजा चेत सिंह को हटा दिया। 1801 में अवध ने रुहेलखंड और निचला दोआब (सत्तांतरित प्रांत या सीडेड प्रोविंसेज) सौंपे, और 1803 के लॉर्ड लेक के अभियान ने मराठों से अलीगढ़ और आगरा छीन लिए (विजित प्रांत); 1836 में इन्हें पश्चिमोत्तर प्रांत के रूप में संगठित किया गया। लॉर्ड डलहौजी ने फरवरी 1856 में व्यपगत के सिद्धांत के तहत नहीं, बल्कि कुशासन के आधार पर स्वयं अवध का विलय कर लिया, और वाजिद अली शाह को कलकत्ता भेज दिया गया। विलय, अनेक तालुकेदारों को बेदखल करने वाला भू-राजस्व बंदोबस्त, और यह तथ्य कि बंगाल सेना के बहुत से सिपाही अवध से आते थे, इन सबने इस क्षेत्र को 1857 के विद्रोह का हृदय बना दिया।

1857 का विद्रोह: विद्रोह 10 मई 1857 को मेरठ में शुरू हुआ, जब सिपाहियों ने नए कारतूस लेने से इनकार करने पर जेल में डाले गए अपने साथियों को छुड़ाया और दिल्ली जाकर बहादुर शाह जफर को सम्राट घोषित किया। कानपुर में अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहेब ने तात्या टोपे और अजीमुल्ला खान के साथ विद्रोह का नेतृत्व किया; जनरल व्हीलर की सेना ने आत्मसमर्पण किया, जिसके बाद सतीचौरा घाट और बीबीघर के हत्याकांड हुए। लखनऊ में बेगम हजरत महल ने अपने पुत्र बिरजिस कद्र को शासक घोषित किया और उनकी सेना ने रेजीडेंसी को घेर लिया, जहाँ सर हेनरी लॉरेंस मारे गए; हैवलॉक और आउट्रम वहाँ पहुँचे, कॉलिन कैंपबेल ने उसे खाली कराया, और मार्च 1858 में लखनऊ पर फिर कब्जा हुआ। रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी को तब तक संभाले रखा जब तक अप्रैल 1858 में सर ह्यूरोज ने उस पर धावा नहीं बोल दिया, और जून 1858 में वे ग्वालियर के निकट लड़ते हुए शहीद हुईं। बरेली में खान बहादुर खान, फैजाबाद में मौलवी अहमदुल्ला शाह और इलाहाबाद में मौलवी लियाकत अली ने नेतृत्व किया। 29 मार्च 1857 को कलकत्ता के निकट बैरकपुर में विद्रोह करने वाले मंगल पांडे का जन्म सामान्यतः बलिया के नगवा गाँव में माना जाता है।

उत्तर प्रदेश में कांग्रेस अधिवेशन: विद्रोह के बाद लॉर्ड कैनिंग ने 1 नवंबर 1858 को इलाहाबाद में महारानी विक्टोरिया का घोषणापत्र पढ़ा। बाद में इस प्रांत में कांग्रेस के अनेक अधिवेशन हुए: इलाहाबाद में 1888 (जॉर्ज यूल, प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष), 1892 (व्योमेश चंद्र बनर्जी) और 1910 (विलियम वेडरबर्न); लखनऊ में 1899 (रमेश चंद्र दत्त), 1916 (अंबिका चरण मजूमदार) और 1936 (जवाहरलाल नेहरू); बनारस में 1905 (गोपाल कृष्ण गोखले); कानपुर में 1925 (सरोजिनी नायडू, प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष); और मेरठ में 1946 (जे.बी. कृपलानी)। 1916 के लखनऊ अधिवेशन में नरमपंथी और गरमपंथी फिर एक हुए और मुस्लिम लीग के साथ लखनऊ समझौता हुआ। किसान प्रतापगढ़ में बाबा रामचंद्र के नेतृत्व वाली अवध किसान सभा (1920) और मदारी पासी के एका आंदोलन के माध्यम से संघर्ष में जुड़े।

चौरी-चौरा और काकोरी: 4 फरवरी 1922 को गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में असहयोग आंदोलन के स्वयंसेवकों की भीड़ ने, जिस पर पुलिस ने गोली चलाई थी, थाने में आग लगा दी, जिसमें बीस से अधिक पुलिसकर्मी मारे गए। गांधीजी ने 12 फरवरी 1922 को बारदोली में असहयोग आंदोलन वापस ले लिया, और अनेक युवा क्रांतिकारी मार्ग की ओर मुड़ गए। 1924 में शचींद्रनाथ सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल और अन्य द्वारा स्थापित हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ने 9 अगस्त 1925 को लखनऊ के निकट काकोरी में एक रेलगाड़ी से सरकारी खजाना लूटा। दिसंबर 1927 में बिस्मिल (गोरखपुर जेल), अशफाकउल्ला खान (फैजाबाद जेल), रोशन सिंह (इलाहाबाद) और राजेंद्र लाहिड़ी (गोंडा जेल) को फाँसी दी गई; बिस्मिल, अशफाकउल्ला और रोशन सिंह तीनों शाहजहाँपुर के थे। चंद्रशेखर आजाद बच निकले, 1928 में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के गठन में सहायक बने, और 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में लड़ते हुए शहीद हुए।

बाद का संघर्ष और नेता: 1928 में लखनऊ में जवाहरलाल नेहरू और गोविंद बल्लभ पंत के नेतृत्व में साइमन कमीशन के विरोध प्रदर्शन पर लाठीचार्ज हुआ। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में चित्तू पांडे ने बलिया में अल्पकालिक समानांतर सरकार बनाई; इस जिले को गर्व से बागी बलिया कहा जाता है। इस प्रांत के नेताओं में काशी हिंदू विश्वविद्यालय (1916) के संस्थापक मदन मोहन मालवीय; इलाहाबाद के आनंद भवन वाले मोतीलाल नेहरू; जवाहरलाल नेहरू; पुरुषोत्तम दास टंडन; लाल बहादुर शास्त्री; बाराबंकी के रफी अहमद किदवई; आचार्य नरेंद्र देव; अकबरपुर के राम मनोहर लोहिया; और कानपुर के पत्र प्रताप के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी शामिल हैं, जो 1931 में सांप्रदायिक दंगे रोकने का प्रयास करते हुए मारे गए।

संयुक्त प्रांत से उत्तर प्रदेश तक: 1902 में आगरा व अवध संयुक्त प्रांत और 1937 में संयुक्त प्रांत कहलाने वाले इस प्रांत में 1937 में भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत पंत के नेतृत्व में कांग्रेस मंत्रिमंडल बना। स्वतंत्रता के बाद संविधान लागू होने से दो दिन पहले, 24 जनवरी 1950 को इसका नाम उत्तर प्रदेश रखा गया, जिससे परिचित संक्षिप्त नाम UP बना रहा; यह दिन अब उत्तर प्रदेश दिवस के रूप में मनाया जाता है।

उदाहरण

- फैजाबाद की संधि 1775: बनारस कंपनी को सौंपा गया; 1801: रुहेलखंड और निचला दोआब सौंपे गए; फरवरी 1856: डलहौजी ने कुशासन के आधार पर अवध का विलय किया।
- उत्तर प्रदेश में 1857: मेरठ 10 मई; कानपुर नाना साहेब और तात्या टोपे; लखनऊ बेगम हजरत महल; झाँसी रानी लक्ष्मीबाई; बरेली खान बहादुर खान; फैजाबाद मौलवी अहमदुल्ला शाह; इलाहाबाद मौलवी लियाकत अली।
- लखनऊ रेजीडेंसी की घेराबंदी: हेनरी लॉरेंस मारे गए; हैवलॉक और आउट्रम पहुँचे; कॉलिन कैंपबेल ने खाली कराया; मार्च 1858 में लखनऊ पर फिर कब्जा।
- महारानी विक्टोरिया का घोषणापत्र लॉर्ड कैनिंग ने 1 नवंबर 1858 को इलाहाबाद में पढ़ा।
- उत्तर प्रदेश में कांग्रेस अधिवेशन: इलाहाबाद 1888, 1892, 1910; लखनऊ 1899, 1916, 1936; बनारस 1905; कानपुर 1925; मेरठ 1946।
- कानपुर 1925: सरोजिनी नायडू प्रथम भारतीय महिला कांग्रेस अध्यक्ष; लखनऊ 1916: लखनऊ समझौता और नरमपंथी-गरमपंथी पुनर्मिलन।
- चौरी-चौरा (गोरखपुर), 4 फरवरी 1922: थाने में आग लगाई गई; गांधीजी ने 12 फरवरी 1922 को बारदोली में असहयोग आंदोलन वापस लिया।
- काकोरी रेल कार्रवाई, 9 अगस्त 1925 (HRA); दिसंबर 1927 में फाँसी: बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान, रोशन सिंह, राजेंद्र लाहिड़ी।
- चंद्रशेखर आजाद 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में शहीद हुए; बलिया में चित्तू पांडे की समानांतर सरकार, 1942।

- नाम परिवर्तन: आगरा व अवध संयुक्त प्रांत 1902, संयुक्त प्रांत 1937, उत्तर प्रदेश 24 जनवरी 1950 (उत्तर प्रदेश दिवस)।

> **त्वरित दोहराव:** बनारस 1775 में सौंपा गया (फैजाबाद की संधि); सत्तांतरित प्रांत 1801; पश्चिमोत्तर प्रांत 1836; अवध का विलय फरवरी 1856 (कुशासन); 1857 मेरठ से 10 मई को शुरू; कानपुर नाना साहेब, लखनऊ हजरत महल, झाँसी लक्ष्मीबाई; घोषणापत्र इलाहाबाद में 1 नवंबर 1858; कांग्रेस लखनऊ 1916 (समझौता), कानपुर 1925 (नायडू), मेरठ 1946; चौरी-चौरा 4 फरवरी 1922; काकोरी 9 अगस्त 1925; आजाद 27 फरवरी 1931; बलिया 1942; उत्तर प्रदेश नाम 24 जनवरी 1950।

उत्तर प्रदेश का गठन, प्रशासन और राजव्यवस्था

प्रांतों से राज्य तक: यह राज्य कई ब्रिटिश इकाइयों से मिलकर बना। बनारस (1775), सत्तांतरित प्रांत (1801) और विजित प्रांत (1803) पहले बंगाल से शासित होते थे; 1833 के चार्टर अधिनियम में आगरा प्रेसीडेंसी का प्रावधान किया गया, और 1836 में यह क्षेत्र आगरा में एक लेफ्टिनेंट-गवर्नर के अधीन पश्चिमोत्तर प्रांत बना। 1857 के बाद शासन का केंद्र इलाहाबाद चला गया। 1856 में विलय किया गया अवध लखनऊ में एक मुख्य आयुक्त के अधीन अलग से शासित था। 1877 में दोनों पद एक कर दिए गए, 1902 में प्रांत का नाम आगरा व अवध संयुक्त प्रांत रखा गया, और भारत शासन अधिनियम 1919 के तहत यह गवर्नर का प्रांत बना, जहाँ 1921 से द्वैध शासन लागू हुआ। 1920 और 1930 के दशकों में शासन का केंद्र इलाहाबाद से लखनऊ स्थानांतरित हुआ, जो आज राजधानी है।

स्वायत्तता और राज्य का दर्जा: भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत प्रांत को द्विसदनीय विधानमंडल मिला; 1937 में प्रांतीय स्वायत्तता शुरू हुई, जब नाम छोटा करके संयुक्त प्रांत किया गया और गोविंद बल्लभ पंत प्रधानमंत्री (प्रीमियर) बने। 1947 में सरोजिनी नायडू राज्यपाल बनीं, जो भारत की प्रथम महिला राज्यपाल थीं। 24 जनवरी 1950 को प्रांत का नाम उत्तर प्रदेश हुआ और संविधान के तहत यह भाग क राज्य बना, जिसके प्रथम मुख्यमंत्री पंत थे; 1963 में सुचेता कृपलानी किसी भी भारतीय राज्य की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनीं। 9 नवंबर 2000 को उत्तर प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2000 द्वारा पर्वतीय जिलों को अलग करके उत्तरांचल बनाया गया, जिसका नाम 2007 में उत्तराखंड हुआ।

विधानमंडल: उत्तर प्रदेश द्विसदनीय विधानमंडल वाले गिने-चुने राज्यों में से एक है (अनुच्छेद 168)। विधान सभा में 403 निर्वाचित सदस्य हैं; उत्तराखंड बनने से पहले यह संख्या 425 थी। इसका कार्यकाल पाँच वर्ष है, जब तक कि इसे पहले भंग न कर दिया जाए। विधान परिषद में 100 सदस्य हैं, जो अनुच्छेद 171 के अनुसार चुने जाते हैं: 38 विधान सभा के सदस्यों द्वारा निर्वाचित, 36 स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा, 8 स्नातकों द्वारा, 8 शिक्षकों द्वारा, और 10 राज्यपाल द्वारा साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारिता या समाज सेवा का विशेष ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों में से मनोनीत। परिषद एक स्थायी सदन है जिसे भंग नहीं किया जा सकता: सदस्य छह वर्ष के लिए चुने जाते हैं और हर दो वर्ष पर एक-तिहाई सदस्य सेवानिवृत्त होते हैं। अनुच्छेद 171 के अनुसार परिषद की सदस्य संख्या विधान सभा की एक-तिहाई से अधिक नहीं और कम से कम 40 होनी चाहिए, और अनुच्छेद 169 के तहत विधान सभा के संकल्प पर संसद परिषद का सृजन या उत्सादन कर सकती है। विधानमंडल लखनऊ के विधान भवन में बैठता है।

संसद में प्रतिनिधित्व: उत्तर प्रदेश लोक सभा में 80 सदस्य भेजता है, जो किसी भी राज्य से अधिक हैं, और राज्य सभा में 31; 2000 से पहले ये संख्याएँ 85 और 34 थीं। 2008 के परिसीमन के तहत इसकी 80 लोक सभा सीटों में से 17 अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित हैं और अनुसूचित जनजातियों के लिए कोई नहीं। दोनों सदनों में, और इसलिए राष्ट्रपति का चुनाव करने वाले निर्वाचक मंडल में, इसकी बड़ी हिस्सेदारी के कारण इस राज्य को प्रायः राष्ट्रीय राजनीति का हृदय-स्थल कहा जाता है।

उच्च न्यायालय और प्रयागराज की संस्थाएँ: उच्च न्यायालय 17 मार्च 1866 को आगरा में पश्चिमोत्तर प्रांत के उच्च न्यायालय के रूप में स्थापित हुआ और 1869 में इलाहाबाद स्थानांतरित हुआ; 1919 में इसका नाम इलाहाबाद उच्च न्यायालय रखा गया। अवध का अपना अवध मुख्य न्यायालय (अवध चीफ कोर्ट) 1925 से लखनऊ में था, और 1948 में दोनों का विलय हुआ, जिससे लखनऊ का न्यायालय इलाहाबाद उच्च न्यायालय की स्थायी खंडपीठ बन गया। प्रयागराज में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (1 अप्रैल 1937 को स्थापित), राजस्व परिषद, महालेखाकार कार्यालय और 1921 में स्थापित माध्यमिक शिक्षा परिषद (हाई स्कूल और इंटरमीडिएट शिक्षा परिषद) भी हैं। लखनऊ राज्यपाल, विधानमंडल और सचिवालय का केंद्र है।

जमीनी प्रशासन: राज्य राजस्व मंडलों में बँटा है, जिनके प्रमुख मंडलायुक्त होते हैं। प्रत्येक जिले का प्रमुख जिलाधिकारी (कलेक्टर) होता है, और जिला राजस्व कार्य के लिए तहसीलों तथा ग्रामीण विकास के लिए विकास खंडों में बँटा होता है। ग्रामीण स्थानीय शासन त्रिस्तरीय है: ग्राम पंचायतें उत्तर प्रदेश पंचायत राज अधिनियम, 1947 के तहत हैं, जो 73वें संशोधन से पुराना है, और क्षेत्र पंचायतें तथा जिला पंचायतें क्षेत्र पंचायत तथा जिला पंचायत अधिनियम, 1961 के तहत हैं। नगरीय क्षेत्रों में नगर निगम, नगर पालिका परिषद और नगर पंचायत हैं।

राज्य प्रतीक: राज्य के प्रतीक-चिह्न में मछलियों का एक जोड़ा, धनुष-बाण और गंगा-यमुना के संगम को दर्शाने वाली लहरदार रेखाएँ हैं; मछलियाँ अवध के नवाबों का राजचिह्न थीं। राज्य पशु बारहसिंगा, राज्य पक्षी सारस, राज्य पुष्प पलाश (टेसू) और राज्य वृक्ष अशोक है। राज्य मछली चिताला है।

उदाहरण

- 1836 पश्चिमोत्तर प्रांत; 1856 अवध का विलय; 1877 पश्चिमोत्तर प्रांत और अवध एक प्रमुख के अधीन; 1902 आगरा व अवध संयुक्त प्रांत; 1937 संयुक्त प्रांत; 1950 उत्तर प्रदेश।
- उत्तर प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2000 के तहत 9 नवंबर 2000 को उत्तरांचल अलग हुआ; 2007 में उसका नाम उत्तराखंड हुआ।
- विधान सभा: 403 निर्वाचित सदस्य (2000 से पहले 425); विधान परिषद: 100 सदस्य; अनुच्छेद 168 के तहत द्विसदनीय।
- विधान परिषद 100 = 38 विधायकों द्वारा + 36 स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा + 8 स्नातकों द्वारा + 8 शिक्षकों द्वारा + 10 राज्यपाल द्वारा मनोनीत।
- लोक सभा 80 सीटें (17 अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित, अनुसूचित जनजातियों के लिए कोई नहीं); राज्य सभा 31 सीटें; 2000 से पहले 85 और 34।

- उच्च न्यायालय: आगरा 1866, इलाहाबाद 1869; लखनऊ में अवध चीफ कोर्ट 1925; 1948 में विलय, लखनऊ स्थायी खंडपीठ बना।
- प्रयागराज की संस्थाएँ: उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (1 अप्रैल 1937), राजस्व परिषद, महालेखाकार, माध्यमिक शिक्षा परिषद (1921)।
- प्रथम: गोविंद बल्लभ पंत प्रथम मुख्यमंत्री; सरोजिनी नायडू स्वतंत्रता के बाद प्रथम राज्यपाल और भारत की प्रथम महिला राज्यपाल; सुचेता कृपलानी भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री (1963)।
- उत्तर प्रदेश में पंचायती राज: उत्तर प्रदेश पंचायत राज अधिनियम 1947 (ग्राम पंचायत); क्षेत्र पंचायत तथा जिला पंचायत अधिनियम 1961।
- राज्य प्रतीक-चिह्न: दो मछलियाँ, धनुष-बाण, गंगा-यमुना की लहरदार रेखाएँ; प्रतीक: बारहसिंगा, सारस, पलाश, अशोक; राज्य मछली चिताला।

त्वरित दोहराव: पश्चिमोत्तर प्रांत 1836 (आगरा), 1857 के बाद शासन केंद्र इलाहाबाद; आगरा व अवध संयुक्त प्रांत 1902; द्वैध शासन 1921; 1935 अधिनियम से द्विसदनीय; उत्तर प्रदेश नाम 24 जनवरी 1950; उत्तराखंड 9 नवंबर 2000 को अलग; विधान सभा 403, परिषद 100 (38+36+8+8+10); लोक सभा 80 (17 अनुसूचित जाति), राज्य सभा 31; उच्च न्यायालय आगरा 1866, इलाहाबाद 1869, लखनऊ खंडपीठ 1948; लोक सेवा आयोग 1937; माध्यमिक शिक्षा परिषद 1921; पंचायत राज अधिनियम 1947; प्रतीक-चिह्न मछली, धनुष-बाण, लहरें।

उत्तर प्रदेश का भूगोल: स्थिति, सीमाएँ और भौतिक स्वरूप

स्थिति और विस्तार: उत्तर प्रदेश उत्तरी भारत में गंगा बेसिन के मध्य भाग में, लगभग 24° उत्तर और 30° उत्तर अक्षांश तथा 77° पूर्व और 84° पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। इसका सबसे दक्षिणी बिंदु कर्क रेखा से थोड़ा उत्तर में है, इसलिए कर्क रेखा इस राज्य से नहीं गुजरती, जबकि भारतीय मानक समय के लिए प्रयुक्त 82.5° पूर्व देशांतर मिर्जापुर के निकट से गुजरता है। 2,40,928 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ, जो भारत का लगभग 7.33 प्रतिशत है, यह राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद चौथा सबसे बड़ा राज्य है; 2000 में उत्तराखंड के अलग होने से पहले यह और बड़ा था। जनगणना 2011 के अनुसार यह सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है, जहाँ 19.98 करोड़ लोग (भारत का लगभग 16.5 प्रतिशत) रहते हैं और जनघनत्व 829 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

सीमाएँ: उत्तर प्रदेश की अंतरराष्ट्रीय सीमा नेपाल से लगती है, जो उत्तरी जिलों में पीलीभीत और लखीमपुर खीरी से होकर बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर और सिद्धार्थनगर से महराजगंज तक जाती है। यह किसी भी अन्य राज्य से अधिक भारतीय राज्यों को छूता है: उत्तर-पश्चिम में उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश, पश्चिम में हरियाणा और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, दक्षिण-पश्चिम में राजस्थान, दक्षिण में मध्य प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में छत्तीसगढ़ और झारखंड, तथा पूर्व में बिहार, यानी आठ राज्य और एक केंद्रशासित प्रदेश। सबसे लंबी सीमा मध्य प्रदेश के साथ है, जबकि हिमाचल प्रदेश केवल सहारनपुर जिले को छूता है। सोनभद्र एकमात्र जिला है जिसकी सीमा चार राज्यों (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और बिहार) से लगती है। छोर के जिलों में सहारनपुर सबसे उत्तरी, सोनभद्र सबसे दक्षिणी और बलिया सबसे पूर्वी जिला है।

तीन भौतिक प्रदेश: राज्य का उच्चावच तीन भागों में बँटता है। उत्तर में हिमालय के पाद में एक सँकरी पट्टी है, बीच में राज्य के लगभग तीन-चौथाई भाग में फैला विशाल गंगा का मैदान है, और दक्षिण में बुंदेलखंड और विंध्य पहाड़ियों में प्रायद्वीपीय पठार की प्राचीन चट्टानें हैं। उत्तरी पट्टी सहारनपुर में शिवालिक पहाड़ियों के छोटे से भाग से शुरू होती है। उनके नीचे भाबर है, गोलाश्मों और बजरी की सरंध्र पट्टी, जहाँ छोटी धाराएँ भूमिगत हो जाती हैं, और फिर तराई, एक निचली, दलदली और खराब जल-निकास वाली पट्टी, जहाँ पानी फिर ऊपर आ जाता है और जो कभी ऊँची घास और साल वनों से ढकी थी। 2000 में भाबर का अधिकांश भाग उत्तराखंड में चला गया, पर तराई आज भी नेपाल सीमा के साथ पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर और महराजगंज से होकर फैली है।

गंगा का मैदान: यह मैदान हिमालयी नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ से बना है और विश्व के सबसे उपजाऊ और घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से है। इसका ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहुत धीमा है, इसीलिए गंगा और उसकी सहायक नदियाँ इसी दिशा में बहती हैं। जलोढ़ के दो प्रकार हैं: बांगर, बाढ़ स्तर से ऊपर की ऊँची भूमि का पुराना जलोढ़, जिसमें प्रायः कंकड़ (चूने की गाँठें) होते हैं, और खादर, बाढ़ के मैदानों का नया जलोढ़, जो बाढ़ से नया होता रहता है और अधिक उपजाऊ है। अन्य विशेषताएँ हैं भूड़, यानी ऊपरी दोआब और रुहेलखंड में गंगा के किनारे बलुई धब्बे और निचले टीले; ऊसर या रेह, यानी बंजर लवणीय और क्षारीय भूमि; घुमावदार नदियों द्वारा छोड़ी गई गोखुर झीलें और ताल; और आगरा, इटावा और जालौन के आसपास यमुना और चंबल के बीहड़। संस्कृति और इतिहास के आधार पर मैदान को गंगा-यमुना के बीच के दोआब, गंगा के उत्तर-पूर्व में रुहेलखंड, मध्य में अवध और पूर्व में पूर्वांचल में बाँटा जाता है।

दक्षिणी पठार: यमुना और गंगा के दक्षिण में भूमि उठकर प्रायद्वीपीय पठार का उत्तरी किनारा बनाती है। दक्षिण-पश्चिम में बुंदेलखंड (झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बाँदा और चित्रकूट) है, जो अत्यंत प्राचीन ग्नेनाइट और नीस का ऊबड़-खाबड़ उच्च भाग है, जिसमें बिखरी चट्टानी पहाड़ियाँ और पतली मिट्टी है, और जिसका जल बेतवा, उसकी सहायक धसान, और केन उत्तर की ओर यमुना तक ले जाती हैं। दक्षिण-पूर्व में बलुआ पत्थर के कगारों वाली विंध्य श्रेणी और कैमूर पहाड़ियाँ प्रयागराज, मिर्जापुर, चंदौली और सोनभद्र तक फैली हैं, जहाँ सोन नदी कैमूर के दक्षिण में एक घाटी में बहती है। पठार मैदान से अधिक शुष्क है और राज्य के अधिकांश वन, खनिज और जलप्रपात यहीं हैं, जैसे मिर्जापुर के निकट विंढम जलप्रपात और चंदौली में राजदरी और देवदरी।

सबसे ऊँची और सबसे निचली भूमि: लगभग पूरा राज्य मैदानी होने के कारण इसका उच्चावच कम है। सबसे ऊँची भूमि किनारों पर है, उत्तर-पश्चिम में सहारनपुर की शिवालिक तलहटी में और दक्षिण की पठारी पहाड़ियों में। सबसे निचली भूमि पूर्व में है, गाजीपुर और बलिया के आसपास गंगा और घाघरा के किनारे, जहाँ से आगे नदियाँ बिहार में प्रवेश करती हैं। इससे वह स्वरूप समझ में आता है जिसे परीक्षाएँ अक्सर पूछती हैं: बाढ़ सबसे अधिक निचले पूर्वी और तराई जिलों में आती है, जबकि दक्षिण-पश्चिम का बुंदेलखंड राज्य का सबसे अधिक सूखा-प्रवण भाग है।

उदाहरण

- क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी (भारत का लगभग 7.33%): राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद चौथा सबसे बड़ा राज्य।

- जनगणना 2011: जनसंख्या 19.98 करोड़ (भारत का लगभग 16.5%), सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य; जनघनत्व 829 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी।
- कर्क रेखा उत्तर प्रदेश से नहीं गुजरती; भारतीय मानक समय का 82.5° पूर्व देशांतर मिर्जापुर के निकट से गुजरता है।
- पड़ोसी: नेपाल, आठ राज्य (उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार) और दिल्ली।
- नेपाल सीमा वाले जिले: पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महराजगंज।
- हिमाचल प्रदेश केवल सहारनपुर को छूता है; सोनभद्र चार राज्यों को छूता है; मध्य प्रदेश के साथ सबसे लंबी सीमा है।
- छोर के जिले: सहारनपुर सबसे उत्तरी, सोनभद्र सबसे दक्षिणी, बलिया सबसे पूर्वी।
- भाबर: बजरी की सरंध्र पट्टी जहाँ धाराएँ लुप्त हो जाती हैं; तराई: उसके नीचे की दलदली पट्टी जहाँ वे फिर निकल आती हैं।
- बांगर: बाढ़ स्तर से ऊपर कंकड़ युक्त पुराना जलोढ़; खादर: बाढ़ मैदान का नया, अधिक उपजाऊ जलोढ़; भूड़: बलुई धब्बे; ऊसर/रेह: लवणीय-क्षारीय भूमि।
- बुंदेलखंड: प्राचीन ग्रेनाइट-नीस पठार, सूखा-प्रवण; मिर्जापुर और सोनभद्र में विंध्य-कैमूर पहाड़ियाँ; चंबल और यमुना के किनारे बीहड़।

> **त्वरित दोहराव:** लगभग 24-30° उत्तर, 77-84° पूर्व; कर्क रेखा नहीं गुजरती; 82.5° पूर्व मिर्जापुर के निकट; क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी (7.33%), चौथा सबसे बड़ा; जनगणना 2011 जनसंख्या 19.98 करोड़, घनत्व 829; नेपाल, 8 राज्यों और दिल्ली से सीमा; मध्य प्रदेश से सबसे लंबी सीमा; हिमाचल केवल सहारनपुर को छूता है; सोनभद्र 4 राज्यों को छूता है; प्रदेश: भाबर-तराई, गंगा मैदान (बांगर, खादर, भूड़, ऊसर), दक्षिणी पठार (बुंदेलखंड, विंध्य-कैमूर); ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व।

उत्तर प्रदेश की नदियाँ, झीलें और सिंचाई

अपवाह तंत्र: लगभग पूरा उत्तर प्रदेश गंगा में अपवाहित होता है। उत्तर की नदियाँ, जैसे रामगंगा, शारदा, घाघरा, राप्ती और गंडक, हिमालय और उसकी तलहटी से निकलती हैं, वर्ष भर बहती हैं (बड़ी नदियों को हिम से भी जल मिलता है) और गाद तथा बाढ़ लाती हैं। दक्षिण की नदियाँ, जैसे चंबल, बेतवा, केन और सोन, प्रायद्वीपीय पठार से निकलती हैं, वर्षा पर निर्भर हैं और गर्मियों में इनमें जल कम रहता है। गोमती अलग है: यह स्वयं मैदान से निकलती है और भूजल तथा वर्षा से पोषित होती है।

गंगा और गोमती: गंगा हरिद्वार में पहाड़ों को छोड़कर बिजनौर जिले में उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है। यह बिजनौर, नरौरा, फर्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर, प्रयागराज, मिर्जापुर, वाराणसी और गाजीपुर से होकर बहती है और बलिया के पास बिहार के साथ सीमा बनाती है। वाराणसी में यह उत्तर की ओर मुड़कर बहती है, इसलिए इसके पश्चिमी तट पर स्थित नगर के घाट उगते सूर्य की ओर हैं। उत्तराखंड से निकलने वाली रामगंगा मुरादाबाद और बरेली से होकर कन्नौज के निकट गंगा में मिलती है। प्रयागराज के नीचे दक्षिण से टोंस इसमें मिलती है। गोमती पीलीभीत में माधो टांडा के निकट गोमत ताल से निकलती है, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, लखनऊ, सुल्तानपुर और जौनपुर से होकर बहती है, सई नदी को ग्रहण करती है, और वाराणसी और गाजीपुर के बीच कैथी में गंगा से मिलती है।

यमुना और दक्षिणी नदियाँ: यमुना यमुनोत्री से निकलती है, हरियाणा और दिल्ली के साथ उत्तर प्रदेश की सीमा बनाती है, और मथुरा, आगरा और इटावा से होकर बहती है। दोआब से इसमें हिंडन मिलती है, जो सहारनपुर की शिवालिक पहाड़ियों से निकलकर गाजियाबाद से होकर बहती है। इसकी बड़ी दक्षिणी सहायक नदियाँ मध्य प्रदेश से आती हैं: अपने बीहड़ों और राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य के लिए प्रसिद्ध चंबल इटावा से आगे (अनुप्रवाह में) भरेह के निकट इससे मिलती है, और इस संगम के निकट सिंध, पहुज और क्वारी भी आ मिलती हैं, इसलिए पाँच नदियों के इस मिलन को पचनदा कहते हैं; बेतवा हमीरपुर में मिलती है; और पन्ना से होकर बहने वाली केन बाँदा जिले में मिलती है। यमुना प्रयागराज के संगम पर गंगा से मिलती है, जिसे त्रिवेणी कहते हैं क्योंकि माना जाता है कि अदृश्य सरस्वती भी वहीं मिलती है।

उत्तरी नदियाँ: नेपाल में करनाली कहलाने वाली घाघरा जल की मात्रा के आधार पर गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी है। यह बहराइच जिले में उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है, बाराबंकी के बहरामघाट पर शारदा (भारत-नेपाल सीमा की काली नदी) को ग्रहण करती है, और इसके नीचे सरयू कहलाती है, जिसके तट पर अयोध्या स्थित है। यह अयोध्या से होकर और बलिया के किनारे-किनारे बहकर बिहार में छपरा के निकट गंगा से मिलती है। राप्ती नेपाल से निकलकर श्रावस्ती, बलरामपुर और गोरखपुर से होकर बहती है और देवरिया के बरहज के निकट घाघरा से मिलती है। गंडक महराजगंज और कुशीनगर के निकट उत्तर-पूर्वी कोने को छूकर बिहार में प्रवेश करती है। दक्षिण-पूर्व में सोन अमरकंटक से बिहार में गंगा तक जाते हुए सोनभद्र को पार करती है, और इसकी सहायक रिहंद पर पिपरी में बाँध बना है। कर्मनाशा बिहार के साथ सीमा का एक भाग बनाती है।

नहरें: नहरों ने दोआब को भारत के सबसे अच्छी तरह सिंचित क्षेत्रों में से एक बना दिया। पूर्वी यमुना नहर, जो एक मुगलकालीन नहर का जीर्णोद्धार है, पश्चिमी जिलों के लिए 1830 में फिर से खोली गई। प्रोबी कॉटले द्वारा अभिकल्पित और 1854 में खोली गई ऊपरी गंगा नहर हरिद्वार (अब उत्तराखंड में) से निकलती है और ऊपरी दोआब को सींचती है, और निचली गंगा नहर बुलंदशहर के नरौरा से निकलती है (1878)। आगरा नहर ओखला में यमुना से जल लेती है। बनबसा से निकलने वाली और 1928 में पूर्ण हुई शारदा नहर पीलीभीत और खीरी से लखनऊ और उससे आगे तक मध्य जिलों को सींचती है; शारदा सहायक परियोजना इसे घाघरा का जल देती है, और सरयू नहर परियोजना पूर्वी जिलों की सेवा करती है। फिर भी राज्य में नहरों की तुलना में नलकूप अधिक क्षेत्र सींचते हैं।

बाँध और परियोजनाएँ: 1962 में पूर्ण हुआ सोनभद्र के पिपरी में स्थित रिहंद बाँध गोविंद बल्लभ पंत सागर का जल रोकता है, जो भारत की सबसे बड़ी मानव-निर्मित झीलों में से एक है; यह मध्य प्रदेश तक फैली है और सिंगरौली क्षेत्र के बिजलीघरों को जल देती है; ओबरा बाँध इसी नदी पर नीचे की ओर है। बेतवा पर माताटीला बाँध, राजघाट बाँध (उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की संयुक्त परियोजना) और झाँसी के निकट पारीछा जलाशय हैं। बुंदेलखंड की इन दो नदियों को जोड़ने वाली केन-बेतवा लिंक परियोजना नदियों को जोड़ने की राष्ट्रीय योजना की पहली परियोजना है।

झीलें और आर्द्रभूमियाँ: उत्तर प्रदेश की अधिकांश झीलें प्राकृतिक गर्त (ताल), गोखुर झीलें या जलाशय हैं। प्रसिद्ध झीलें हैं गोरखपुर का रामगढ़ ताल, संत कबीर नगर का बखिरा ताल, आगरा के निकट कीठम झील (सूर सरोवर), महोबा की चंदेलकालीन झीलें जैसे मदन सागर और कीरत सागर, और कानपुर की मोती झील। अनेक आर्द्रभूमियाँ पक्षी विहार या संरक्षित आर्द्रभूमि हैं, जैसे नवाबगंज (उन्नाव), समसपुर (रायबरेली), सांडी (हरदोई), समान (मैनपुरी), पार्वती अरगा (गोंडा) और सरसई नावर (इटावा)। ऊपरी गंगा का ब्रजघाट से नरौरा तक का भाग 2005 में अंतरराष्ट्रीय महत्व की रामसर आर्द्रभूमि घोषित हुआ, जो राज्य का पहला रामसर स्थल था।

उदाहरण

- गंगा बिजनौर जिले में उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है, वाराणसी में उत्तर की ओर बहती है और बलिया के पास बिहार की सीमा बनाती है; रामगंगा कन्नौज के निकट मिलती है।
- गोमती: गोमत ताल (पीलीभीत) से उद्गम; लखनऊ और जौनपुर से होकर; सई इसमें मिलती है; वाराणसी-गाजीपुर के बीच कैथी में गंगा से संगम।
- यमुना की सहायक नदियाँ: हिंडन (सहारनपुर से), चंबल (इटावा से आगे), बेतवा (हमीरपुर), केन (बाँदा); प्रयागराज के संगम पर गंगा से मिलन।
- घाघरा: जल मात्रा में गंगा की सबसे बड़ी सहायक; शारदा बहरामघाट (बाराबंकी) पर मिलती है; अयोध्या में सरयू कहलाती है; छपरा (बिहार) के निकट गंगा से मिलती है।
- राप्ती नेपाल से गोरखपुर होकर बरहज (देवरिया) के निकट घाघरा से मिलती है; सोन नदी सोनभद्र को पार करती है।
- नहरें: पूर्वी यमुना 1830; ऊपरी गंगा 1854 (प्रोबी कॉटले, हरिद्वार से); निचली गंगा 1878 (नरौरा); शारदा 1928 (बनबसा)।
- रिहंद बाँध (पिपरी, सोनभद्र), 1962 में पूर्ण: जलाशय गोविंद बल्लभ पंत सागर।
- बेतवा परियोजनाएँ: माताटीला बाँध, राजघाट बाँध (उत्तर प्रदेश-मध्य प्रदेश संयुक्त) और पारीछा; केन-बेतवा लिंक नदी जोड़ो की पहली परियोजना है।
- ऊपरी गंगा का ब्रजघाट से नरौरा तक का भाग 2005 में उत्तर प्रदेश का पहला रामसर स्थल बना।
- उत्तर प्रदेश में सिंचाई का सबसे बड़ा साधन नहरें नहीं, नलकूप हैं।

> **त्वरित दोहराव:** गंगा बिजनौर से प्रवेश, वाराणसी में उत्तरवाहिनी, बलिया में बिहार सीमा; गोमती गोमत ताल (पीलीभीत) से कैथी तक; चंबल इटावा से आगे, बेतवा हमीरपुर में, केन बाँदा में यमुना से मिलती है; प्रयागराज में संगम; घाघरा जल मात्रा में सबसे बड़ी, शारदा बहरामघाट पर मिलती है, अयोध्या में सरयू; राप्ती बरहज में मिलती है; ऊपरी गंगा नहर 1854, निचली 1878, शारदा 1928; रिहंद बाँध 1962 (गोविंद बल्लभ पंत सागर); बेतवा पर माताटीला, राजघाट; पहला रामसर स्थल 2005।

उत्तर प्रदेश की जलवायु, मृदा, वन और वन्यजीव

जलवायु और ऋतुएँ: उत्तर प्रदेश की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है। समुद्र से दूर होने के कारण यह स्पष्ट रूप से महाद्वीपीय है, जहाँ गर्मियाँ गर्म, सर्दियाँ ठंडी और तापमान का अंतर अधिक होता है। शीत ऋतु, लगभग दिसंबर से फरवरी तक, साफ दिन, कोहरा और शीत लहर लाती है, और पश्चिमी विक्षोभ मुख्यतः पश्चिम में हल्की शीतकालीन वर्षा देते हैं जो रबी फसलों के लिए लाभकारी है। ग्रीष्म ऋतु, मार्च से मध्य जून तक, लू नामक गर्म, शुष्क पछुआ हवा के प्रभाव में रहती है, और बुंदेलखंड तथा दक्षिण-पश्चिम में 45°C से अधिक तापमान सामान्य है। वर्षा ऋतु, मध्य जून से सितंबर तक, दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा के साथ आती है, जो गंगा घाटी में पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ती है। अक्टूबर और नवंबर लौटते मानसून की ऋतु है।

वर्षा का स्वरूप: वर्ष की अधिकांश वर्षा मानसून के चार महीनों में होती है। मानसून पूर्व से आगे बढ़ता है, इसलिए वर्षा पूर्व से पश्चिम की ओर घटती है, और हिमालय की तलहटी के निकट उत्तर में यह दक्षिण-पश्चिम की तुलना में अधिक होती है। तराई और गोरखपुर तथा महराजगंज जैसे उत्तर-पूर्वी जिलों में सबसे अधिक वर्षा होती है, और आगरा तथा मथुरा के आसपास के पश्चिमी जिले सबसे शुष्क हैं। परिणामस्वरूप पूर्व और तराई बाढ़ झेलते हैं जबकि बुंदेलखंड सूखा, कभी-कभी एक ही वर्ष में।

मृदाएँ: राज्य के अधिकांश भाग में जलोढ़ मृदा है। खादर, बाढ़ मैदानों का नया जलोढ़, हल्की और उपजाऊ है, जबकि बांगर, पुराना जलोढ़, अधिक चिकनी है और उसमें कंकड़ होते हैं। तराई में बारीक, नम, चिकनी और ह्यूमस से भरपूर मृदा है। भूड़ पश्चिम की हल्की बलुई मृदा है। ऊसर या रेह मध्य और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में मिलने वाले लवणीय और क्षारीय धब्बे हैं, जिन्हें जिप्सम से सुधारा जाता है। बुंदेलखंड की चार विशिष्ट मृदाएँ हैं: मार, रेगुर जैसी काली चिकनी मृदा; काबर, भारी चिपचिपी चिकनी मिट्टी; पड़वा, हल्की भूरी बलुई दोमट; और राकड़, ऊँचे भागों की लाल, कंकरीली और कम उपजाऊ मृदा। मिर्जापुर और सोनभद्र के विंध्य जिलों में लाल मृदा भी मिलती है।

वन क्षेत्र: अपने आकार की तुलना में उत्तर प्रदेश में वन बहुत कम हैं, जो राष्ट्रीय वन नीति 1988 द्वारा सुझाए गए एक-तिहाई क्षेत्र से बहुत नीचे हैं, क्योंकि मैदान में हजारों वर्षों से खेती होती आई है। बचे हुए वन दो पट्टियों में हैं। नेपाल सीमा के साथ तराई पट्टी में, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर और महराजगंज जैसे जिलों में, साल प्रधान उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन और ऊँचे नम घास के मैदान हैं। दक्षिणी पट्टी में, सोनभद्र, मिर्जापुर, चंदौली, चित्रकूट और ललितपुर में, तेंदू, महुआ, खैर और सलई जैसे वृक्षों वाले उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन हैं, और दक्षिण-पश्चिम के सबसे शुष्क भागों में कँटीली झाड़ियाँ हैं।

दुधवा और बाघ अभयारण्य: नेपाल सीमा पर लखीमपुर खीरी में स्थित दुधवा राज्य का सबसे प्रसिद्ध संरक्षित क्षेत्र है। यह 1977 में राष्ट्रीय उद्यान बना, और पड़ोसी किशनपुर वन्यजीव अभयारण्य के साथ मिलकर 1987 में प्रोजेक्ट टाइगर के तहत दुधवा बाघ अभयारण्य बना; बाद में बहराइच का कतर्नियाघाट अभयारण्य भी इसमें जोड़ा गया। इसके साल वन और नम घास के मैदान राज्य पशु बारहसिंगा का आवास हैं, और 1984 में असम और नेपाल से लाकर यहाँ एक सींग वाले भारतीय गैंडे को फिर से बसाया गया। दुधवा के निकट टाइगर हेवन में रहने वाले संरक्षणवादी बिली अर्जन सिंह ने इसके संरक्षण के लिए अभियान चलाया। निकटवर्ती पीलीभीत के वनों को 2014 में बाघ अभयारण्य घोषित किया गया।

वन्यजीव अभयारण्य: बहराइच में गेरुआ नदी पर स्थित कतर्नियाघाट घड़ियालों और गंगा डॉल्फिन की रक्षा करता है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में फैला राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य घड़ियाल का मुख्य आवास है और डॉल्फिन तथा कछुओं को भी आश्रय देता है। 1957 में स्थापित चंदौली का चंद्रप्रभा अभयारण्य वह स्थान है जहाँ 1958 में गिर से लाए गए एशियाई सिंह छोड़े गए थे, यद्यपि वे बाद में लुप्त हो गए; यह राजदरी और देवदरी जलप्रपातों के लिए भी प्रसिद्ध है। मिर्जापुर और सोनभद्र का कैमूर अभयारण्य काले हिरण और चिंकारा की रक्षा करता है, हस्तिनापुर अभयारण्य गंगा के बाढ़ मैदान के लंबे भाग में फैला है, और महराजगंज का सोहगी बरवा तथा बलरामपुर और श्रावस्ती का सोहेलवा तराई वनों की रक्षा करते हैं। लखनऊ का कुकरैल केंद्र नदियों में छोड़ने के लिए घड़ियालों का प्रजनन कराता है।

पक्षी विहार: राज्य की अनेक आर्द्रभूमियाँ शीतकालीन प्रवासी पक्षियों और राज्य पक्षी सारस को आश्रय देती हैं, जो विश्व का सबसे ऊँचा उड़ने वाला पक्षी है। प्रमुख पक्षी विहार हैं उन्नाव का नवाबगंज (जिसका आधिकारिक नाम अब शहीद चंद्रशेखर आजाद पक्षी विहार है), रायबरेली का समसपुर, हरदोई का सांडी, कन्नौज का लाख-बहोसी, मैनपुरी का समान, एटा का पटना, संत कबीर नगर का बखिरा, गौतम बुद्ध नगर में यमुना पर ओखला और आगरा के निकट सूर सरोवर (कीठम)। 2009 में भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित गंगा डॉल्फिन गंगा, घाघरा, गेरुआ और चंबल में पाई जाती है।

उदाहरण

- लू: गर्मियों की गर्म, शुष्क पछुआ हवा; पश्चिमी विक्षोभ: हल्की शीतकालीन वर्षा जो रबी फसलों के लिए लाभकारी है।
- वर्षा पूर्व से पश्चिम की ओर और तराई से दक्षिण की ओर घटती है; गोरखपुर-महराजगंज सबसे आर्द्र, आगरा-मथुरा सबसे शुष्क।
- बुंदेलखंड की मृदाएँ: मार (काली, रेगुर जैसी), काबर (भारी चिपचिपी चिकनी), पड़वा (हल्की बलुई दोमट), राकड़ (लाल, कंकरीली)।
- ऊसर/रेह: लवणीय-क्षारीय मृदा, जिप्सम से सुधार; भूड़: पश्चिम की बलुई मृदा; खादर बांगर से नई और अधिक उपजाऊ।
- वन पट्टियाँ: तराई की साल पट्टी (खीरी, पीलीभीत, बहराइच) और दक्षिणी शुष्क पर्णपाती पट्टी (सोनभद्र, मिर्जापुर, ललितपुर)।
- दुधवा (लखीमपुर खीरी): राष्ट्रीय उद्यान 1977, किशनपुर के साथ बाघ अभयारण्य 1987; 1984 में गैंडे फिर बसाए गए; बारहसिंगा का आवास।
- पीलीभीत 2014 में बाघ अभयारण्य घोषित हुआ; कतर्नियाघाट (बहराइच) दुधवा बाघ अभयारण्य का भाग है।
- चंद्रप्रभा (चंदौली): अभयारण्य 1957; गिर के सिंह 1958 में छोड़े गए; राजदरी और देवदरी जलप्रपात।
- घड़ियाल: राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य, कतर्नियाघाट और कुकरैल प्रजनन केंद्र (लखनऊ); गंगा डॉल्फिन राष्ट्रीय जलीय जीव (2009)।
- पक्षी विहार: नवाबगंज (उन्नाव), समसपुर (रायबरेली), सांडी (हरदोई), लाख-बहोसी (कन्नौज), समान (मैनपुरी), पटना (एटा), बखिरा (संत कबीर नगर), ओखला।

> **त्वरित दोहराव:** उष्णकटिबंधीय मानसूनी, महाद्वीपीय जलवायु; गर्मी में लू, सर्दी में पश्चिमी विक्षोभ; वर्षा पूर्व से पश्चिम की ओर घटती है; बुंदेलखंड की मृदाएँ मार, काबर, पड़वा, राकड़; ऊसर जिप्सम से सुधारा जाता है; वन एक-तिहाई लक्ष्य से बहुत कम; तराई साल पट्टी और दक्षिणी शुष्क पट्टी; दुधवा राष्ट्रीय उद्यान 1977, बाघ अभयारण्य 1987, गैंडे 1984; पीलीभीत बाघ अभयारण्य 2014; चंद्रप्रभा 1957, सिंह 1958; घड़ियाल के लिए चंबल और कतर्नियाघाट; सारस राज्य पक्षी; डॉल्फिन राष्ट्रीय जलीय जीव 2009।

उत्तर प्रदेश की कृषि, खनिज और उद्योग

कृषि ऋतुएँ: उत्तर प्रदेश के अधिकांश लोगों की मुख्य आजीविका कृषि है, जिसे गहरा जलोढ़, नहरें और नलकूप सहारा देते हैं। फसलों की तीन ऋतुएँ हैं। रबी फसलें अक्टूबर-नवंबर में बोई और मार्च-अप्रैल में काटी जाती हैं: गेहूँ, जौ, चना, मटर, मसूर, सरसों और आलू। खरीफ फसलें मानसून के साथ बोई जाती हैं: धान, मक्का, बाजरा, ज्वार, अरहर और उड़द। जायद फसलें छोटी ग्रीष्म ऋतु में उगती हैं: तरबूज, खरबूजा, खीरा और सब्जियाँ। लंबी अवधि की फसल गन्ना वसंत या शरद में बोया जाता है। 1960 के दशक के अंत की हरित क्रांति नहरों से सिंचित पश्चिमी जिलों में सबसे तेजी से फैली।

जहाँ उत्तर प्रदेश अग्रणी है: उत्तर प्रदेश लंबे समय से गन्ना, गेहूँ, आलू और दूध का भारत का अग्रणी उत्पादक रहा है। यह धान, दलहन, सरसों, सब्जियों और आम का बड़ा उत्पादक है; आम की प्रसिद्ध किस्में हैं लखनऊ के निकट मलिहाबाद का दशहरी, वाराणसी का लंगड़ा और चौसा। बाराबंकी, बदायूँ, रामपुर और संभल के आसपास उगाया जाने वाला मेंथा (जापानी पुदीना) राज्य को भारत के पुदीना तेल का मुख्य स्रोत बनाता है। फिरोजाबाद, फर्रुखाबाद और कन्नौज सहित आगरा क्षेत्र आलू पट्टी है, और मेरठ के निकट मोदीपुरम में केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान का क्षेत्रीय केंद्र है, जिसका मुख्यालय शिमला में है। राज्य के अन्य राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों में कानपुर का भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, वाराणसी का भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान और झाँसी का भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान शामिल हैं।

चीनी पट्टी: गन्ना राज्य की मुख्य नकदी फसल और उसके सबसे बड़े कृषि-आधारित उद्योग का आधार है। यह दो मुख्य पट्टियों में उगाया जाता है: सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर और मुरादाबाद की पश्चिमी पट्टी, और लखीमपुर खीरी, सीतापुर, बरेली, शाहजहाँपुर, गोरखपुर, देवरिया और कुशीनगर की तराई और पूर्वी पट्टी। चीनी मिलें खेतों के पास होती हैं क्योंकि कटा हुआ गन्ना जल्दी अपनी शर्करा खो देता है। बहुत सा गन्ना गुड़ और खांडसारी बनाने में भी जाता है, और मुजफ्फरनगर में देश की सबसे बड़ी गुड़ मंडियों में से एक है। अनुसंधान का नेतृत्व लखनऊ का भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, कानपुर का राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (1936) और शाहजहाँपुर का गन्ना अनुसंधान संस्थान करते हैं।

खनिज: उत्तर प्रदेश खनिजों में निर्धन है क्योंकि इसका अधिकांश भाग जलोढ़ मैदान है; खनिज केवल दक्षिणी पठार में मिलते हैं। सोनभद्र और मिर्जापुर में चूना पत्थर और डोलोमाइट हैं, जिनका उपयोग चुर्क और डाला के सीमेंट कारखाने करते हैं, और सिंगरौली कोयला क्षेत्र के उत्तर प्रदेश वाले भाग में कोयला है। ललितपुर, झाँसी, हमीरपुर और महोबा में पायरोफिलाइट और डायस्पोर हैं, और ललितपुर में रॉक फॉस्फेट है। प्रयागराज के शंकरगढ़ और चित्रकूट की सिलिका बालू फिरोजाबाद के काँच उद्योग को मिलती है। मिर्जापुर के उत्तम चुनार बलुआ पत्थर से अशोक के स्तंभ बने थे। बाँदा की केन नदी से शजर पत्थर मिलता है, जो फर्न जैसी आकृतियों वाला क्वार्ट्ज है और आभूषणों में प्रयुक्त होता है।

बिजली: सिंगरौली का कोयला और रिहंद जलाशय का जल सोनभद्र को राज्य का ऊर्जा केंद्र बनाते हैं, जहाँ शक्तिनगर में सिंगरौली सुपर थर्मल पावर स्टेशन (NTPC की पहली परियोजना), बीजपुर में रिहंद स्टेशन, और राज्य के अपने अनपरा और ओबरा स्टेशन हैं। अन्य ताप बिजलीघरों में दादरी (गौतम बुद्ध नगर), ऊँचाहार (रायबरेली), टांडा (अंबेडकर नगर), हरदुआगंज (अलीगढ़), पारीछा (झाँसी) और पनकी (कानपुर) शामिल हैं, और औरैया में गैस आधारित संयंत्र है। दो दाबित भारी जल रिएक्टरों वाला बुलंदशहर का नरौरा परमाणु बिजलीघर 1991 से वाणिज्यिक उत्पादन कर रहा है और राज्य का एकमात्र परमाणु संयंत्र है। जलविद्युत कम है, जो रिहंद, ओबरा और माताटीला से मिलती है।

नगरवार पारंपरिक उद्योग: अनेक नगर किसी ऐसे शिल्प के लिए प्रसिद्ध हैं जो स्थानीय कच्चे माल और पुराने संरक्षण से विकसित हुआ। कानपुर ब्रिटिश काल में चमड़ा, सूती और ऊनी मिलों के केंद्र के रूप में विकसित हुआ, और आगरा चमड़े के जूते, संगमरमर पर जड़ाई का काम और पेठा बनाता है। मुरादाबाद पीतल नगरी है, अलीगढ़ ताले और हार्डवेयर बनाता है, और फिरोजाबाद काँच की चूड़ियाँ और काँच का सामान बनाता है (सुहाग नगरी)। भदोही और मिर्जापुर भारत की मुख्य हाथ से बुने कालीनों की पट्टी हैं। वाराणसी रेशमी साड़ियों और ब्रोकेड के लिए, लखनऊ चिकनकारी और जरदोजी के लिए, कन्नौज इत्र के लिए, खुर्जा चीनी मिट्टी के बर्तनों के लिए, सहारनपुर काष्ठ नक्काशी के लिए, मेरठ खेल सामग्री और कैंचियों के लिए, हाथरस हींग के लिए, आजमगढ़ का निजामाबाद काली मिट्टी के बर्तनों के लिए और गोरखपुर टेराकोटा के लिए प्रसिद्ध है। आधुनिक उद्योगों में वाराणसी का बनारस रेल इंजन कारखाना (1961 में डीजल रेल इंजन कारखाने के रूप में स्थापित), मथुरा रिफाइनरी (1982) और 1976 में स्थापित नोएडा का इलेक्ट्रॉनिक्स और IT केंद्र शामिल हैं।

एक जनपद एक उत्पाद: राज्य सरकार द्वारा 24 जनवरी 2018 को, उत्तर प्रदेश दिवस पर, शुरू की गई एक जनपद एक उत्पाद (ODOP) योजना हर जिले के लिए एक विशिष्ट उत्पाद चुनती है, जो कोई शिल्प, प्रसंस्कृत खाद्य या कृषि उत्पाद हो सकता है, और उसे ऋण, प्रशिक्षण, डिजाइन, विपणन और सामान्य सुविधा केंद्रों से सहायता देती है। उद्देश्य पहले से मौजूद कौशल, जैसे मुरादाबाद के पीतल के बर्तन, फिरोजाबाद का काँच या भदोही के कालीन, के आधार पर पारंपरिक उद्योगों को पुनर्जीवित करना, स्थानीय रोजगार पैदा करना और निर्यात बढ़ाना है। बाद में यह मॉडल राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनाया गया।

उदाहरण

- उत्तर प्रदेश लंबे समय से गन्ना, गेहूँ, आलू और दूध का भारत का अग्रणी उत्पादक रहा है।
- रबी: गेहूँ, जौ, चना, सरसों, आलू; खरीफ: धान, मक्का, बाजरा, अरहर; जायद: तरबूज, खीरा, सब्जियाँ।
- चीनी पट्टियाँ: पश्चिमी (सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर) और तराई-पूर्वी (खीरी, सीतापुर, गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर)।
- चीनी अनुसंधान: भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर (1936); शाहजहाँपुर का अनुसंधान संस्थान।
- आम की किस्में: दशहरी (मलिहाबाद), लंगड़ा (वाराणसी), चौसा; मेंथा (पुदीना) बाराबंकी और बदायूँ के आसपास।
- दक्षिण के खनिज: चूना पत्थर और कोयला (सोनभद्र), पायरोफिलाइट और डायस्पोर (ललितपुर, झाँसी), रॉक फॉस्फेट (ललितपुर), सिलिका बालू (शंकरगढ़, प्रयागराज)।
- सोनभद्र की बिजली: सिंगरौली (NTPC की पहली परियोजना), रिहंद, अनपरा, ओबरा; नरौरा (बुलंदशहर) राज्य का परमाणु संयंत्र, 1991 से वाणिज्यिक।
- नगर और शिल्प: मुरादाबाद पीतल, अलीगढ़ ताले, फिरोजाबाद काँच, भदोही कालीन, कन्नौज इत्र, खुर्जा चीनी मिट्टी के बर्तन, सहारनपुर काष्ठ नक्काशी।
- और नगर: कानपुर चमड़ा, आगरा जूते और पेठा, मेरठ खेल सामग्री, हाथरस हींग, निजामाबाद काली मिट्टी के बर्तन, गोरखपुर टेराकोटा।
- ODOP 24 जनवरी 2018 को शुरू: हर जिले का एक विशिष्ट उत्पाद, जिसे ऋण, प्रशिक्षण, डिजाइन और विपणन की सहायता मिलती है।

> **त्वरित दोहराव:** रबी गेहूँ, आलू, सरसों; खरीफ धान, मक्का, अरहर; जायद तरबूज-खरबूजा; गन्ना, गेहूँ, आलू और दूध में उत्तर प्रदेश अग्रणी; चीनी पट्टियाँ पश्चिम और तराई-पूर्व; राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर 1936, गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ; खनिज केवल दक्षिण में (सोनभद्र चूना पत्थर, कोयला; ललितपुर पायरोफिलाइट, रॉक फॉस्फेट; शंकरगढ़ सिलिका बालू); सिंगरौली NTPC की पहली परियोजना; नरौरा परमाणु 1991; मुरादाबाद पीतल, फिरोजाबाद काँच, अलीगढ़ ताले, भदोही कालीन, कन्नौज इत्र; मथुरा रिफाइनरी 1982; नोएडा 1976; ODOP 24 जनवरी 2018।

उत्तर प्रदेश की कला, शिल्प, संगीत और नृत्य

कथक: भारत के शास्त्रीय नृत्यों में से एक कथक इसी क्षेत्र में कथाकारों से विकसित हुआ, जो मंदिरों में महाकाव्यों की कथा सुनाते थे। मुगल और नवाबी दरबारों में यह लय और भाव की परिष्कृत कला बन गया, जिसमें घुँघरुओं के साथ तेज पदचाप (तत्कार), तेज घुमाव (चक्कर) और अभिनय होते हैं। इसके तीन मुख्य घरानों में से दो उत्तर प्रदेश के हैं। लखनऊ घराना नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में फला-फूला और लालित्य, कोमलता और भावपूर्ण अभिनय पर बल देता है, प्रायः ठुमरी के साथ; इसकी परंपरा ठाकुर प्रसाद और भाई कालका प्रसाद तथा बिंदादीन महाराज से अच्छन महाराज, लच्छू महाराज, शंभू महाराज और पंडित बिरजू महाराज तक जाती है। बनारस घराने का मूल जानकीप्रसाद से जोड़ा जाता है, और प्रसिद्ध नृत्यांगना सितारा देवी इसी घराने की थीं। तीसरा, जयपुर घराना, राजस्थान का है।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत: यह क्षेत्र हिंदुस्तानी संगीत का पालना रहा है। पटियाली (अब कासगंज जिले में) में जन्मे अमीर खुसरो को परंपरा से कव्वाली और तराना का श्रेय दिया जाता है। ध्रुपद के आचार्य वृंदावन के स्वामी हरिदास को तानसेन के गुरु के रूप में याद किया जाता है, जो अकबर के दरबार में गाते थे। ठुमरी वाजिद अली शाह के समय लखनऊ में विकसित हुई, और बनारस ने अपनी पूरब अंग ठुमरी के साथ अर्ध-शास्त्रीय दादरा, कजरी, चैती और होरी विकसित कीं; इसके महान गायकों में सिद्धेश्वरी देवी, रसूलन बाई और ठुमरी की रानी कहलाने वाली गिरिजा देवी हैं। राज्य के ख्याल घरानों में उस्ताद फैयाज खान द्वारा प्रसिद्ध किया गया आगरा घराना और रामपुर-सहसवान घराना शामिल हैं। बनारस का अपना तबला घराना भी है, जिसकी स्थापना पंडित राम सहाय ने की और जिसके आचार्यों में किशन महाराज हैं। पंडित रविशंकर (सितार) का जन्म वाराणसी में हुआ, और उस्ताद बिस्मिल्लाह खान (शहनाई) बिहार के डुमराँव में जन्मे, पर वाराणसी में रहे और वहीं शहनाई बजाई। लखनऊ में विष्णु नारायण भातखंडे ने 1926 में मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक की स्थापना की, जो आज भातखंडे संस्थान है।

लोकगीत: हर क्षेत्र के अपने ऋतु गीत और संस्कार गीत हैं। कजरी वर्षा के महीने सावन में स्त्रियों द्वारा, विशेषकर मिर्जापुर और वाराणसी में, गाई जाती है, जिसमें प्रायः प्रिय से बिछोह का भाव होता है। चैती चैत्र महीने में गाई जाती है। बिरहा पूर्वांचल के अहीर समुदाय की भोजपुरी गीत विधा है। बुंदेलखंड में वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला आल्हा महोबा के भाइयों आल्हा और ऊदल की वीर गाथा है, जो कवि जगनिक रचित माने जाने वाले आल्हखंड पर आधारित है। सोहर बच्चे के जन्म पर, होरी या फाग होली पर और रसिया ब्रज में गाए जाते हैं, जबकि निर्गुण गीत कबीर जैसे संतों की शिक्षा को आगे ले जाते हैं।

लोकनृत्य और लोकनाट्य: उत्तर प्रदेश का सबसे प्रसिद्ध लोकनाट्य नौटंकी पद्यबद्ध संवादों वाला संगीतमय नाटक है जो नगाड़े की थाप पर गाया जाता है; इसकी दो मुख्य शैलियाँ हाथरस और कानपुर हैं, और कानपुर शैली में प्रशिक्षित गुलाब बाई इसकी सबसे प्रसिद्ध महिला कलाकार बनीं। ब्रज (मथुरा-वृंदावन) की रासलीला कृष्ण के जीवन का मंचन करती है, और रामलीला रामायण का, जिसमें सबसे प्रसिद्ध वाराणसी के रामनगर की महीने भर चलने वाली रामलीला है; UNESCO ने 2008 में रामलीला को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में रखा। चरकुला ब्रज का नृत्य है जिसमें स्त्रियाँ तेल के दीपों से जगमगाता ऊँचा बहुमंजिला लकड़ी का ढाँचा सिर पर संतुलित करती हैं। अन्य लोकनृत्यों में पूर्वांचल का धोबिया नृत्य, बुंदेलखंड के दीवारी और राई, तथा सोनभद्र का करमा और अन्य जनजातीय नृत्य शामिल हैं।

वस्त्र और शिल्प: वाराणसी जरी (सोने-चाँदी के धागे) से बुनी अपनी रेशमी साड़ियों और ब्रोकेड, जिनमें भारी किमखाब भी है, के लिए प्रसिद्ध है, और बनारसी ब्रोकेड और साड़ियों को भौगोलिक संकेतक (GI) प्राप्त है। लखनऊ की चिकनकारी हल्के सूती या मलमल के कपड़े पर महीन सफेद कढ़ाई है, जिसे किंवदंती नूरजहाँ से जोड़ती है, और इसमें बखिया (छाया कार्य) और फंदा जैसे टाँके होते हैं; लखनऊ और बरेली जरदोजी, यानी उभरी हुई सुनहरी कढ़ाई, के केंद्र हैं। आगरा संगमरमर में कीमती पत्थरों की जड़ाई की मुगल कला पच्चीकारी (पिएत्रा ड्यूरा) को जीवित रखे हुए है। भदोही और मिर्जापुर हाथ से गाँठ लगाकर कालीन बुनते हैं, वाराणसी लाख से रंगे लकड़ी के खिलौने बनाता है, निजामाबाद चाँदी जैसी आकृतियों वाले काली मिट्टी के बर्तन, गोरखपुर टेराकोटा के घोड़े और हाथी, खुर्जा चमकदार चीनी मिट्टी के बर्तन, और सहारनपुर नक्काशीदार लकड़ी का सामान बनाता है।

चित्रकला: मुगल लघु चित्रकला अकबर की कार्यशालाओं में फली-फूली, जहाँ सचित्र हमजानामा तैयार हुआ, और आगरा में जहाँगीर के समय भी जारी रही। नवाबों के समय लखनऊ (अवध) शैली विकसित हुई, और अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में लखनऊ और बनारस यूरोपीय संरक्षकों के लिए बनाई जाने वाली कंपनी चित्रकला के केंद्र थे। लोक परंपराओं में ब्रज की साँझी, यानी कृष्ण के जीवन के चित्र बनाने के लिए प्रयुक्त कागज के महीन कटे स्टेंसिल, पूर्वी उत्तर प्रदेश में वधू के कक्ष की दीवारों पर बनने वाले कोहबर चित्र, और त्योहारों तथा संस्कारों पर बनाई जाने वाली शुभ भूमि सज्जा चौक पूरना शामिल हैं।

उदाहरण

- कथक घराने: लखनऊ (लालित्य और अभिनय; वाजिद अली शाह, बिंदादीन, बिरजू महाराज), बनारस (जानकीप्रसाद, सितारा देवी), जयपुर (राजस्थान)।
- ठुमरी वाजिद अली शाह के समय लखनऊ में विकसित हुई; बनारस की पूरब अंग ठुमरी; गिरिजा देवी ठुमरी की रानी कहलाईं।
- वृंदावन के स्वामी हरिदास तानसेन के गुरु थे; अमीर खुसरो का जन्म पटियाली (कासगंज) में हुआ।
- कजरी: मिर्जापुर और वाराणसी के सावन गीत; चैती: चैत्र के गीत; बिरहा: पूर्वांचल के अहीरों के गीत; आल्हा: आल्हा-ऊदल की बुंदेलखंडी गाथा।
- नौटंकी की शैलियाँ: हाथरस और कानपुर; कानपुर शैली में प्रशिक्षित गुलाब बाई इसकी प्रसिद्ध महिला कलाकार थीं।
- चरकुला (ब्रज): स्त्रियाँ सिर पर जलते दीपों का बहुमंजिला ढाँचा संतुलित करके नाचती हैं; दीवारी और राई बुंदेलखंड के नृत्य हैं।
- रामलीला 2008 में UNESCO की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत बनी; रामनगर (वाराणसी) की रामलीला एक महीने चलती है।
- शिल्प: चिकनकारी (लखनऊ), जरदोजी (लखनऊ, बरेली), ब्रोकेड और जरी (वाराणसी), पच्चीकारी (आगरा), काली मिट्टी के बर्तन (निजामाबाद)।
- भातखंडे ने 1926 में लखनऊ में मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक स्थापित किया; रविशंकर का जन्म वाराणसी में हुआ; बिस्मिल्लाह खान वहीं रहे।
- लोक कला: साँझी (ब्रज के कागजी स्टेंसिल), कोहबर (वधू कक्ष के भित्ति चित्र), चौक पूरना (भूमि सज्जा)।

> **त्वरित दोहराव:** कथक मंदिरों के कथाकारों से; लखनऊ घराना (वाजिद अली शाह, बिंदादीन, बिरजू महाराज) और बनारस घराना (जानकीप्रसाद, सितारा देवी); लखनऊ और बनारस की ठुमरी; गिरिजा देवी; स्वामी हरिदास तानसेन के गुरु; आगरा और रामपुर-सहसवान घराने; भातखंडे कॉलेज 1926; कजरी, चैती, बिरहा, आल्हा, सोहर; नौटंकी (हाथरस, कानपुर), रासलीला, रामलीला (UNESCO 2008), चरकुला; बनारसी ब्रोकेड, चिकनकारी, जरदोजी, पच्चीकारी; साँझी और कोहबर कला।

उत्तर प्रदेश के मेले, त्योहार, भाषा, साहित्य और लोग

कुंभ और माघ मेला: तीर्थयात्रियों का विश्व का सबसे बड़ा समागम कुंभ मेला बारी-बारी से चार स्थानों पर लगता है: प्रयागराज, जहाँ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम है, तथा हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। प्रयागराज में पूर्ण कुंभ हर 12 वर्ष पर और अर्धकुंभ हर 6 वर्ष पर माघ महीने (जनवरी-फरवरी) में लगता है, जिसके मुख्य स्नान पर्व मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी और माघी पूर्णिमा जैसे दिन होते हैं। UNESCO ने 2017 में कुंभ मेले को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में जोड़ा। हर वर्ष संगम पर एक छोटा माघ मेला लगता है, जहाँ कल्पवासी कहलाने वाले श्रद्धालु पूरे महीने नदी तट पर रहते हैं। यह परंपरा पुरानी है: ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी में प्रयाग में हर्ष के दान का वर्णन किया था।

अन्य त्योहार और मेले: देव दीपावली वाराणसी में दीपावली के पंद्रह दिन बाद कार्तिक पूर्णिमा को मनाई जाती है, जब घाटों को उन देवताओं के लिए दीपों से सजाया जाता है जिनके बारे में माना जाता है कि वे गंगा स्नान के लिए उतरते हैं। 2017 से राज्य दीपावली की पूर्व संध्या पर अयोध्या में दीपोत्सव आयोजित करता है, जिसमें सरयू के किनारे राम की पैड़ी पर दीप जलाए जाते हैं। मथुरा, वृंदावन, बरसाना और नंदगाँव जन्माष्टमी और लंबी होली मनाते हैं, जिसमें बरसाना और नंदगाँव की लठमार होली शामिल है। प्रमुख मेले हैं बलिया का ददरी पशु मेला और आगरा के निकट बटेश्वर मेला (दोनों कार्तिक में),

गढ़मुक्तेश्वर का कार्तिक पूर्णिमा स्नान मेला, मेरठ का नौचंदी मेला, सूफी संत हाजी वारिस अली शाह की स्मृति में बाराबंकी का देवा शरीफ मेला, और मगहर का मेला, जहाँ कबीर ने देह त्यागी थी।

भाषा और बोलियाँ: उत्तर प्रदेश राजभाषा अधिनियम, 1951 के तहत देवनागरी लिपि में हिंदी राजभाषा है, और 1989 में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाया गया। दोनों मेरठ और दिल्ली के आसपास के क्षेत्र की खड़ी बोली से विकसित हुईं। ग्रियर्सन के वर्गीकरण में राज्य की बोलियाँ तीन समूहों में आती हैं। पश्चिमी हिंदी में खड़ी बोली (मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर), ब्रजभाषा (मथुरा, आगरा, अलीगढ़), कन्नौजी (कन्नौज, फर्रुखाबाद, इटावा) और बुंदेली (झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर) हैं। पूर्वी हिंदी में अवधी (लखनऊ, अयोध्या, सुल्तानपुर, रायबरेली) है। बिहारी समूह में भोजपुरी (वाराणसी, गोरखपुर, बलिया, गाजीपुर, देवरिया) है।

संत कवि: राज्य के भक्ति संतों ने जनभाषा में रचना की। रामानंद ने वाराणसी में उपदेश दिया, और परंपरा उनके शिष्यों में कबीर को गिनती है, जो वाराणसी के जुलाहे कवि थे, जिनकी निर्गुण वाणी बीजक में संकलित है और जिन्होंने मगहर में देह त्यागी, तथा रैदास (रविदास) को, जिनके पद गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं। तुलसीदास ने 1574 में अयोध्या में अवधी में रामचरितमानस की रचना आरंभ की और विनय पत्रिका भी लिखी; उन्होंने अपना उत्तर जीवन वाराणसी में बिताया। ब्रज के नेत्रहीन कवि सूरदास ने सूरसागर में कृष्ण के बचपन का गान किया। जायस के मलिक मुहम्मद जायसी ने 1540 में अवधी में पद्मावत लिखा, और रसखान ने ब्रज में कृष्ण काव्य रचा।

आधुनिक साहित्य: वाराणसी के भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक कहा जाता है। रायबरेली के महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका का संपादन किया और खड़ी बोली गद्य और पद्य का मानक तय किया, और आजमगढ़ के अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध ने खड़ी बोली का पहला महाकाव्य प्रियप्रवास लिखा। 1880 में वाराणसी के निकट लमही में जन्मे प्रेमचंद (धनपत राय श्रीवास्तव) ने गोदान, गबन और निर्मला उपन्यास और कफन जैसी कहानियाँ लिखीं; उनका आरंभिक उर्दू कहानी संग्रह सोजे वतन अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था। छायावादी कवियों में वाराणसी के जयशंकर प्रसाद ने कामायनी लिखी, और 1907 में फर्रुखाबाद में जन्मी महादेवी वर्मा को 1982 में यामा के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। चिरगाँव (झाँसी) के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती लिखी; इलाहाबाद के हरिवंश राय बच्चन ने मधुशाला लिखी; और फिराक गोरखपुरी को 1969 में उर्दू कविता के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। मिर्जा गालिब का जन्म 1797 में आगरा में हुआ, और आजमगढ़ के राहुल सांकृत्यायन महान यात्रा-लेखक थे।

लोग: जनगणना 2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनसंख्या 19.98 करोड़ थी, जो किसी भी राज्य से अधिक है; लिंगानुपात 1,000 पुरुषों पर 912 स्त्रियाँ और साक्षरता दर 67.68 प्रतिशत थी, और इलाहाबाद (अब प्रयागराज) सबसे अधिक जनसंख्या वाला जिला था। राज्य में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या किसी भी राज्य से अधिक है, जो इसके लोगों का लगभग पाँचवाँ भाग है, पर अनुसूचित जनजातियाँ 1 प्रतिशत से कम हैं। सबसे प्रसिद्ध जनजाति थारू नेपाल सीमा के साथ तराई में, लखीमपुर खीरी, बहराइच, बलरामपुर, श्रावस्ती और महराजगंज जैसे जिलों में रहती है; थारू गाँव खेती और मछली पकड़ने से जीविका चलाते हैं, और परिवार में स्त्रियों का स्थान दृढ़ होता है। बुक्सा बिजनौर में रहते हैं, और गोंड, खरवार, चेरो, बैगा और अगरिया सोनभद्र और मिर्जापुर में, जबकि भोटिया, जौनसारी और राजी अब मुख्यतः उत्तराखंड में हैं।

उदाहरण

- प्रयागराज में कुंभ: पूर्ण कुंभ हर 12 वर्ष पर, अर्धकुंभ हर 6 वर्ष पर; 2017 में UNESCO की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत।
- माघ मेला: हर वर्ष संगम पर; कल्पवासी माघ महीने भर नदी तट पर रहते हैं।
- देव दीपावली: वाराणसी के घाटों पर कार्तिक पूर्णिमा; अयोध्या दीपोत्सव 2017 से दीपावली की पूर्व संध्या पर; बरसाना और नंदगाँव की लठमार होली।
- मेले: ददरी (बलिया) पशु मेला, बटेश्वर (आगरा), गढ़मुक्तेश्वर, नौचंदी (मेरठ), देवा शरीफ (बाराबंकी), मगहर का कबीर मेला।
- हिंदी राजभाषा है (उत्तर प्रदेश राजभाषा अधिनियम, 1951); उर्दू 1989 से दूसरी राजभाषा है।
- बोलियाँ: खड़ी बोली (मेरठ), ब्रज (मथुरा-आगरा), कन्नौजी (कन्नौज), बुंदेली (झाँसी), अवधी (लखनऊ-अयोध्या), भोजपुरी (वाराणसी-गोरखपुर)।
- रामचरितमानस (अवधी, तुलसीदास, 1574 में आरंभ); पद्मावत (अवधी, जायसी, 1540); सूरसागर (ब्रज, सूरदास); बीजक (कबीर)।
- प्रेमचंद का जन्म 1880 में लमही (वाराणसी) में; महादेवी वर्मा का जन्म 1907 में फर्रुखाबाद में, ज्ञानपीठ 1982; फिराक गोरखपुरी ज्ञानपीठ 1969।
- जनगणना 2011: 19.98 करोड़ लोग, लिंगानुपात 912, साक्षरता 67.68%; अनुसूचित जनजातियाँ 1% से कम; तराई की थारू जनजाति।
- जन्मस्थान संबंधी भ्रम: निराला का जन्म बंगाल में हुआ (पैतृक घर उन्नाव); सुमित्रानंदन पंत का जन्म कौसानी में हुआ, जो अब उत्तराखंड में है।

> **त्वरित दोहराव:** प्रयागराज में कुंभ हर 12 वर्ष, अर्धकुंभ हर 6 वर्ष, UNESCO 2017; माघ मेला और कल्पवास हर वर्ष; वाराणसी में देव दीपावली; अयोध्या दीपोत्सव 2017 से; हिंदी राजभाषा (1951 अधिनियम), उर्दू दूसरी (1989); बोलियाँ खड़ी बोली, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली, अवधी, भोजपुरी; कबीर (बीजक, मगहर में देहांत), तुलसीदास (मानस 1574), सूरदास, जायसी (पद्मावत 1540); प्रेमचंद (लमही 1880), महादेवी (ज्ञानपीठ 1982), फिराक (1969); जनगणना 2011 लिंगानुपात 912, साक्षरता 67.68%; तराई के थारू।

उत्तर प्रदेश के स्मारक, पर्यटन और प्रसिद्ध व्यक्तित्व

ताजमहल और आगरा किला: ताजमहल, आगरा किला और फतेहपुर सीकरी, जो सभी आगरा जिले में हैं, UNESCO विश्व धरोहर स्थल हैं, और 2026 से सारनाथ भी विश्व धरोहर स्थल है। यमुना के दक्षिणी तट पर स्थित ताजमहल शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल के मकबरे के रूप में बनवाया, जिनकी मृत्यु 1631 में हुई; यह उसके बाद के वर्षों में राजस्थान के मकराना के सफेद संगमरमर से पच्चीकारी जड़ाई के साथ बना, और उस्ताद अहमद लाहौरी को इसका मुख्य वास्तुकार माना जाता है। अकबर द्वारा 1565 से लाल बलुआ पत्थर में बनवाए गए आगरा किले में दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, जहाँगीरी महल और शाहजहाँ की मोती मस्जिद हैं; औरंगजेब द्वारा वहाँ बंदी बनाए गए शाहजहाँ की मृत्यु 1666 में इसी किले में हुई, जहाँ से ताज दिखाई देता है। दोनों

1983 में सूची में शामिल हुए। 1996 में एम.सी. मेहता मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने संगमरमर को प्रदूषण से बचाने के लिए ताज ट्रेपेजियम क्षेत्र के उद्योगों को स्वच्छ ईंधन अपनाने या वहाँ से हटने का आदेश दिया। आगरा में सिकंदरा में जहाँगीर द्वारा पूरा कराया गया अकबर का मकबरा और नूरजहाँ द्वारा अपने पिता के लिए बनवाया गया एतमादुद्दौला का मकबरा भी है, जिसे बेबी ताज कहते हैं और जिसे प्रायः पूरी तरह सफेद संगमरमर से मढ़ा और पच्चीकारी वाला पहला मुगल मकबरा बताया जाता है।

फतेहपुर सीकरी: अकबर ने 1571 में शेख सलीम चिश्ती के आश्रम के निकट यह नगर बसाया, जिनके आशीर्वाद को वे 1569 में अपने पुत्र सलीम (जहाँगीर) के जन्म का श्रेय देते थे, और लगभग 1585 तक यह उनकी राजधानी रहा। लाल बलुआ पत्थर से बना यह नगर फारसी और भारतीय शैलियों का मेल है: जामा मस्जिद, सलीम चिश्ती का सफेद संगमरमर का मकबरा, गुजरात विजय की स्मृति में बना बुलंद दरवाजा, पाँच मंजिला पंच महल, एक नक्काशीदार केंद्रीय स्तंभ वाला दीवान-ए-खास, इबादतखाना जहाँ अकबर 1575 से धार्मिक वाद-विवाद कराते थे, और जोधाबाई का महल तथा बीरबल का महल कहलाने वाले भवन। इसके परित्याग का सामान्यतः बताया जाने वाला कारण जल की कमी है। UNESCO ने इसे 1986 में सूची में शामिल किया।

बौद्ध और हिंदू तीर्थ केंद्र: सारनाथ में धमेख स्तूप प्रथम उपदेश के स्थान को चिह्नित करता है, धर्मराजिका स्तूप अशोक के समय का है, और सारनाथ संग्रहालय में वह सिंह स्तंभ-शीर्ष है जिसे 26 जनवरी 1950 को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया; मूलगंधकुटी विहार 1931 में अनागारिक धर्मपाल की महाबोधि सोसाइटी ने बनवाया। जुलाई 2026 में अपने 48वें सत्र में विश्व धरोहर समिति ने सारनाथ के प्राचीन बौद्ध स्थल को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया, जिसमें सारनाथ के पुरातात्विक अवशेष और निकटवर्ती चौखंडी स्तूप आते हैं। कुशीनगर में विशाल शयन मुद्रा वाली बुद्ध प्रतिमा वाला महापरिनिर्वाण मंदिर और दाह स्थल पर रामाभार स्तूप है। वाराणसी में बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक काशी विश्वनाथ मंदिर का वर्तमान स्वरूप 1780 में इंदौर की अहिल्याबाई होल्कर ने बनवाया, और महाराजा रणजीत सिंह ने इसके शिखरों के लिए सोना दिया; अविभाजित भारत के संगमरमर के उभरे मानचित्र वाले भारत माता मंदिर का उद्घाटन 1936 में गांधीजी ने किया। सरयू तट पर अयोध्या में हनुमानगढ़ी, कनक भवन और राम जन्मभूमि मंदिर हैं, जहाँ 9 नवंबर 2019 के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद 22 जनवरी 2024 को रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा हुई। मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि और द्वारकाधीश मंदिर हैं, और वृंदावन में बांके बिहारी मंदिर तथा 1590 में आमेर के राजा मान सिंह द्वारा लाल बलुआ पत्थर से बनवाया गया गोविंद देव मंदिर है।

लखनऊ और दुर्ग: लखनऊ के नवाबी भवनों में आसफुद्दौला द्वारा 1784 में अकाल राहत कार्य के रूप में बनवाया गया बड़ा इमामबाड़ा है, जिसका विशाल मेहराबदार हॉल बिना बीम के बना है, जिसके ऊपर भूलभुलैया और बगल में आसफी मस्जिद है; साथ ही रूमी दरवाजा, मुहम्मद अली शाह का छोटा इमामबाड़ा, और रेजीडेंसी, जिसके खंडहर 1857 की घेराबंदी की याद दिलाते हैं। बंगरा पहाड़ी पर स्थित झाँसी का किला 1613 में ओरछा के राजा बीर सिंह देव ने बनवाया और यह सदा के लिए रानी लक्ष्मीबाई से जुड़ा है। अन्य दुर्गों में बाँदा का कालिंजर, जहाँ 1545 में शेरशाह सूरी की मृत्यु हुई, मिर्जापुर का चुनार, और संगम पर अकबर का इलाहाबाद किला है, जिसके भीतर अक्षयवट और अशोक स्तंभ हैं।

अन्य पर्यटन स्थल: अक्सर पूछे जाने वाले अन्य स्थल हैं देवगढ़ (ललितपुर) का दशावतार मंदिर, सीतापुर का नैमिषारण्य, जहाँ माना जाता है कि ऋषियों ने पुराण सुने, मिर्जापुर के निकट विंध्यवासिनी देवी मंदिर वाला विंध्याचल, राम के वनवास से जुड़ा मंदाकिनी तट पर चित्रकूट, नाथ परंपरा का केंद्र गोरखपुर का गोरखनाथ मंदिर, जौनपुर की अटाला मस्जिद, दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, और बौद्ध परिपथ पर श्रावस्ती और संकिसा। आगरा का राम बाग परंपरा से बाबर द्वारा बनवाया गया सबसे पुराना मुगल उद्यान माना जाता है।

उत्तर प्रदेश में जन्मे व्यक्तित्व: राज्य में जन्मे प्रधानमंत्रियों में जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और विश्वनाथ प्रताप सिंह (इलाहाबाद), लाल बहादुर शास्त्री (मुगलसराय, 1904), चरण सिंह (नूरपुर, तब मेरठ जिले में) और चंद्रशेखर (इब्राहिमपट्टी, बलिया) शामिल हैं। राज्य के भारत रत्न प्राप्तकर्ताओं में भगवान दास (1955), पुरुषोत्तम दास टंडन (1961) और मदन मोहन मालवीय (2015) शामिल हैं। गणितज्ञ हरीश चंद्र का जन्म 1923 में कानपुर में हुआ। कला में सितार वादक रविशंकर और गायिका गिरिजा देवी का जन्म वाराणसी में, कथक आचार्य बिरजू महाराज का लखनऊ में, कवि कैफी आजमी का आजमगढ़ में और अभिनेता अमिताभ बच्चन का इलाहाबाद में हुआ। खेल में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को इलाहाबाद में हुआ, जो अब राष्ट्रीय खेल दिवस है, और वे झाँसी में बड़े हुए; बाराबंकी के के.डी. सिंह बाबू भी हॉकी के महान खिलाड़ी थे। भ्रम से बचें: अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म ग्वालियर में और गोविंद बल्लभ पंत का अल्मोड़ा में हुआ, जो अब उत्तराखंड में है।

उदाहरण

- UNESCO विश्व धरोहर स्थल: आगरा जिले में ताजमहल और आगरा किला (1983) तथा फतेहपुर सीकरी (1986); चौखंडी स्तूप सहित सारनाथ का प्राचीन बौद्ध स्थल (2026)।
- ताजमहल: शाहजहाँ ने मुमताज महल के लिए बनवाया; मकराना का सफेद संगमरमर; मुख्य वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी; ताज ट्रेपेजियम क्षेत्र आदेश (सर्वोच्च न्यायालय, 1996)।
- फतेहपुर सीकरी: 1571 में बसाई गई; गुजरात विजय के लिए बुलंद दरवाजा; सलीम चिश्ती का मकबरा; पंच महल; इबादतखाना (1575)।
- एतमादुद्दौला का मकबरा (बेबी ताज), नूरजहाँ ने बनवाया: प्रायः सफेद संगमरमर और पच्चीकारी वाला पहला मुगल मकबरा कहा जाता है; अकबर का मकबरा सिकंदरा में है।
- सारनाथ: धमेख स्तूप (प्रथम उपदेश), धर्मराजिका स्तूप (अशोक), सिंह स्तंभ-शीर्ष 26 जनवरी 1950 को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया।
- काशी विश्वनाथ का पुनर्निर्माण 1780 में अहिल्याबाई होल्कर ने कराया; भारत माता मंदिर (वाराणसी) का उद्घाटन 1936 में गांधीजी ने किया।
- बड़ा इमामबाड़ा (लखनऊ): आसफुद्दौला, 1784, अकाल राहत, भूलभुलैया; झाँसी किला: ओरछा के बीर सिंह देव, 1613।
- कालिंजर किला (बाँदा): 1545 में शेरशाह सूरी की मृत्यु यहीं हुई; इलाहाबाद किला (अकबर) में अक्षयवट और अशोक स्तंभ हैं।
- उत्तर प्रदेश में जन्मे प्रधानमंत्री: नेहरू, शास्त्री, इंदिरा गांधी, चरण सिंह, वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर; वाजपेयी का जन्म ग्वालियर में हुआ।
- मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को इलाहाबाद में (राष्ट्रीय खेल दिवस); गणितज्ञ हरीश चंद्र का जन्म 1923 में कानपुर में।

त्वरित दोहराव: ताजमहल और आगरा किला UNESCO 1983, फतेहपुर सीकरी 1986, सारनाथ 2026; ताज शाहजहाँ ने बनवाया, मकराना संगमरमर, उस्ताद अहमद लाहौरी; फतेहपुर सीकरी 1571 में बसी, बुलंद दरवाजा; एतमादुद्दौला बेबी ताज; सारनाथ धमेख स्तूप; काशी विश्वनाथ 1780 में अहिल्याबाई ने बनवाया; बड़ा इमामबाड़ा 1784; झाँसी किला 1613; शेरशाह की मृत्यु कालिंजर में 1545; प्रधानमंत्री नेहरू, शास्त्री, इंदिरा, चरण सिंह, वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर; ध्यानचंद का जन्म इलाहाबाद में 29 अगस्त 1905।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/up-state-gk/

दोहराव पत्रक

हर पाठ का त्वरित दोहराव एक जगह - परीक्षा से पहले की आख़िरी पढ़ाई के लिए।

उत्तर प्रदेश सामान्य ज्ञान	24 जनवरी 1950 को उत्तर प्रदेश नाम; 9 नवंबर 2000 को उत्तराखंड अलग; प्रथम CM गो.ब. पंत, प्रथम राज्यपाल सरोजिनी नायडू; 1857 की शुरुआत मेरठ 10 मई; चौरी-चौरा 4 फरवरी 1922 (गोरखपुर); काकोरी 9 अगस्त 1925; विधान सभा 403, परिषद 100, लोक सभा 80, राज्य सभा 31; उच्च न्यायालय इलाहाबाद 1866, लखनऊ खंडपीठ 1948; राज्य पशु बारहसिंगा, पक्षी सारस, पुष्प पलाश, वृक्ष अशोक; गन्ना, गेहूँ, आलू में सबसे बड़ा उत्पादक; दुधवा NP लखीमपुर खीरी; रिहंद बाँध सोनभद्र; UNESCO विश्व धरोहर स्थल ताजमहल, आगरा किला, फतेहपुर सीकरी और सारनाथ (2026)।
प्राचीन और मध्यकालीन उत्तर प्रदेश: हड़प्पा स्थलों से अवध के नवाबों तक	आलमगीरपुर सबसे पूर्वी हड़प्पा स्थल; कोल्डिहवा प्राचीन चावल; मुख्यतः उत्तर प्रदेश में छह महाजनपद (काशी, कोसल, वत्स, पांचाल, शूरसेन, मल्ल); सारनाथ प्रथम उपदेश, कुशीनगर महापरिनिर्वाण, श्रावस्ती जेतवन, संकिसा अवतरण; सारनाथ सिंह शीर्ष चुनार बलुआ पत्थर का; मथुरा कला (कुषाण); देवगढ़ और भीतरगाँव (गुप्त); हर्ष की राजधानी कन्नौज; चंदावर 1194; शर्की जौनपुर 1394; आगरा 1504; फतेहपुर सीकरी 1571; अवध 1722 से, लखनऊ राजधानी 1775।
आधुनिक उत्तर प्रदेश और स्वतंत्रता संग्राम (1775-1950)	बनारस 1775 में सौंपा गया (फैजाबाद की संधि); सत्तांतरित प्रांत 1801; पश्चिमोत्तर प्रांत 1836; अवध का विलय फरवरी 1856 (कुशासन); 1857 मेरठ से 10 मई को शुरू; कानपुर नाना साहेब, लखनऊ हजरत महल, झाँसी लक्ष्मीबाई; घोषणापत्र इलाहाबाद में 1 नवंबर 1858; कांग्रेस लखनऊ 1916 (समझौता), कानपुर 1925 (नायडू), मेरठ 1946; चौरी-चौरा 4 फरवरी 1922; काकोरी 9 अगस्त 1925; आजाद 27 फरवरी 1931; बलिया 1942; उत्तर प्रदेश नाम 24 जनवरी 1950।
उत्तर प्रदेश का गठन, प्रशासन और राजव्यवस्था	पश्चिमोत्तर प्रांत 1836 (आगरा), 1857 के बाद शासन केंद्र इलाहाबाद; आगरा व अवध संयुक्त प्रांत 1902; द्वैध शासन 1921; 1935 अधिनियम से द्विसदनीय; उत्तर प्रदेश नाम 24 जनवरी 1950; उत्तराखंड 9 नवंबर 2000 को अलग; विधान सभा 403, परिषद 100 (38+36+8+8+10); लोक सभा 80 (17 अनुसूचित जाति), राज्य सभा 31; उच्च न्यायालय आगरा 1866, इलाहाबाद 1869, लखनऊ खंडपीठ 1948; लोक सेवा आयोग 1937; माध्यमिक शिक्षा परिषद 1921; पंचायत राज अधिनियम 1947; प्रतीक-चिह्न मछली, धनुष-बाण, लहरें।
उत्तर प्रदेश का भूगोल: स्थिति, सीमाएँ और भौतिक स्वरूप	लगभग 24-30° उत्तर, 77-84° पूर्व; कर्क रेखा नहीं गुजरती; 82.5° पूर्व मिर्जापुर के निकट; क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी (7.33%), चौथा सबसे बड़ा; जनगणना 2011 जनसंख्या 19.98 करोड़, घनत्व 829; नेपाल, 8 राज्यों और दिल्ली से सीमा; मध्य प्रदेश से सबसे लंबी सीमा; हिमाचल केवल सहारनपुर को छूता है; सोनभद्र 4 राज्यों को छूता है; प्रदेश: भाबर-तराई, गंगा मैदान (बांगर, खादर, भूड़, ऊसर), दक्षिणी पठार (बुंदेलखंड, विंध्य-कैमूर); ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व।
उत्तर प्रदेश की नदियाँ, झीलें और सिंचाई	गंगा बिजनौर से प्रवेश, वाराणसी में उत्तरवाहिनी, बलिया में बिहार सीमा; गोमती गोमत ताल (पीलीभीत) से कैथी तक; चंबल इटावा से आगे, बेतवा हमीरपुर में, केन बाँदा में यमुना से मिलती है; प्रयागराज में संगम; घाघरा जल मात्रा में सबसे बड़ी, शारदा बहरामघाट पर मिलती है, अयोध्या में सरयू; राप्ती बरहज में मिलती है; ऊपरी गंगा नहर 1854, निचली 1878, शारदा 1928; रिहंद बाँध 1962 (गोविंद बल्लभ पंत सागर); बेतवा पर माताटीला, राजघाट; पहला रामसर स्थल 2005।
उत्तर प्रदेश की जलवायु, मृदा, वन और वन्यजीव	उष्णकटिबंधीय मानसूनी, महाद्वीपीय जलवायु; गर्मी में लू, सर्दी में पश्चिमी विक्षोभ; वर्षा पूर्व से पश्चिम की ओर घटती है; बुंदेलखंड की मृदाएँ मार, काबर, पड़वा, राकड़; ऊसर जिप्सम से सुधारा जाता है; वन एक-तिहाई लक्ष्य से बहुत कम; तराई साल पट्टी और दक्षिणी शुष्क पट्टी; दुधवा राष्ट्रीय उद्यान 1977, बाघ अभयारण्य 1987, गैंडे 1984; पीलीभीत बाघ अभयारण्य 2014; चंद्रप्रभा 1957, सिंह 1958; घड़ियाल के लिए चंबल और कतर्नियाघाट; सारस राज्य पक्षी; डॉल्फिन राष्ट्रीय जलीय जीव 2009।
उत्तर प्रदेश की कृषि, खनिज और उद्योग	रबी गेहूँ, आलू, सरसों; खरीफ धान, मक्का, अरहर; जायद तरबूज-खरबूजा; गन्ना, गेहूँ, आलू और दूध में उत्तर प्रदेश अग्रणी; चीनी पट्टियाँ पश्चिम और तराई-पूर्व; राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर 1936, गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ; खनिज केवल दक्षिण में (सोनभद्र चूना पत्थर, कोयला; ललितपुर पायरोफिलाइट, रॉक फॉस्फेट; शंकरगढ़ सिलिका बालू); सिंगरौली NTPC की पहली परियोजना; नरौरा परमाणु 1991; मुरादाबाद पीतल, फिरोजाबाद काँच, अलीगढ़ ताले, भदोही कालीन, कन्नौज इत्र; मथुरा रिफाइनरी 1982; नोएडा 1976; ODOP 24 जनवरी 2018।
उत्तर प्रदेश की कला, शिल्प, संगीत और नृत्य	कथक मंदिरों के कथाकारों से; लखनऊ घराना (वाजिद अली शाह, बिंदादीन, बिरजू महाराज) और बनारस घराना (जानकीप्रसाद, सितारा देवी); लखनऊ और बनारस की ठुमरी; गिरिजा देवी; स्वामी हरिदास तानसेन के गुरु; आगरा और रामपुर-सहसवान घराने; भातखंडे कॉलेज 1926; कजरी, चैती, बिरहा, आल्हा, सोहर; नौटंकी (हाथरस, कानपुर), रासलीला, रामलीला (UNESCO 2008), चरकुला; बनारसी ब्रोकेड, चिकनकारी, जरदोजी, पच्चीकारी; साँझी और कोहबर कला।
उत्तर प्रदेश के मेले, त्योहार, भाषा, साहित्य और लोग	प्रयागराज में कुंभ हर 12 वर्ष, अर्धकुंभ हर 6 वर्ष, UNESCO 2017; माघ मेला और कल्पवास हर वर्ष; वाराणसी में देव दीपावली; अयोध्या दीपोत्सव 2017 से; हिंदी राजभाषा (1951 अधिनियम), उर्दू दूसरी (1989); बोलियाँ खड़ी बोली, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली, अवधी, भोजपुरी; कबीर (बीजक, मगहर में देहांत), तुलसीदास (मानस 1574), सूरदास, जायसी (पद्मावत 1540); प्रेमचंद (लमही 1880), महादेवी (ज्ञानपीठ 1982), फिराक (1969); जनगणना 2011 लिंगानुपात 912, साक्षरता 67.68%; तराई के थारू।
उत्तर प्रदेश के स्मारक, पर्यटन और प्रसिद्ध व्यक्तित्व	ताजमहल और आगरा किला UNESCO 1983, फतेहपुर सीकरी 1986, सारनाथ 2026; ताज शाहजहाँ ने बनवाया, मकराना संगमरमर, उस्ताद अहमद लाहौरी; फतेहपुर सीकरी 1571 में बसी, बुलंद दरवाजा; एतमादुद्दौला बेबी ताज; सारनाथ धमेख स्तूप; काशी विश्वनाथ 1780 में अहिल्याबाई ने बनवाया; बड़ा इमामबाड़ा 1784; झाँसी किला 1613; शेरशाह की मृत्यु कालिंजर में 1545; प्रधानमंत्री नेहरू, शास्त्री, इंदिरा, चरण सिंह, वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर; ध्यानचंद का जन्म इलाहाबाद में 29 अगस्त 1905।

Pariksha Saathi एक स्वतंत्र परियोजना है और किसी भर्ती संस्था या सरकारी विभाग से संबद्ध नहीं है। हर विषय के नोट्स: parikshasaathi.com/downloads/